आध्यात्मिक उन्नति का सर्वांग विकास हेतु वडताल संस्थान का त्रिमासिक

स्वामिनारायण संदेश

वर्ष - २ अंक - १
जनवरी - २०१९

श्री हरिकृष्ण महाराज, श्री राधाकृष्णदेव

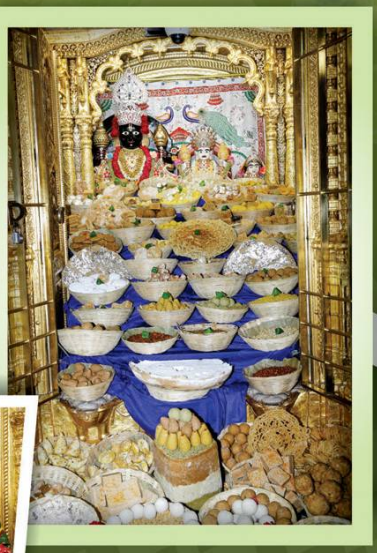

श्री रणछोडरायजी,
श्री लक्ष्मीनारायण देव

श्री वासुदेवनारायण, श्री भक्तिधर्मदेव

श्री स्वामिनारायण मन्दिर वडतालधाम - 'कार्तिकी समैया' अंतर्गत देवो के अभिषेक और अन्नकूट दर्शन एवं समैया में उपस्थित संतो-सत्संगी भक्तजन

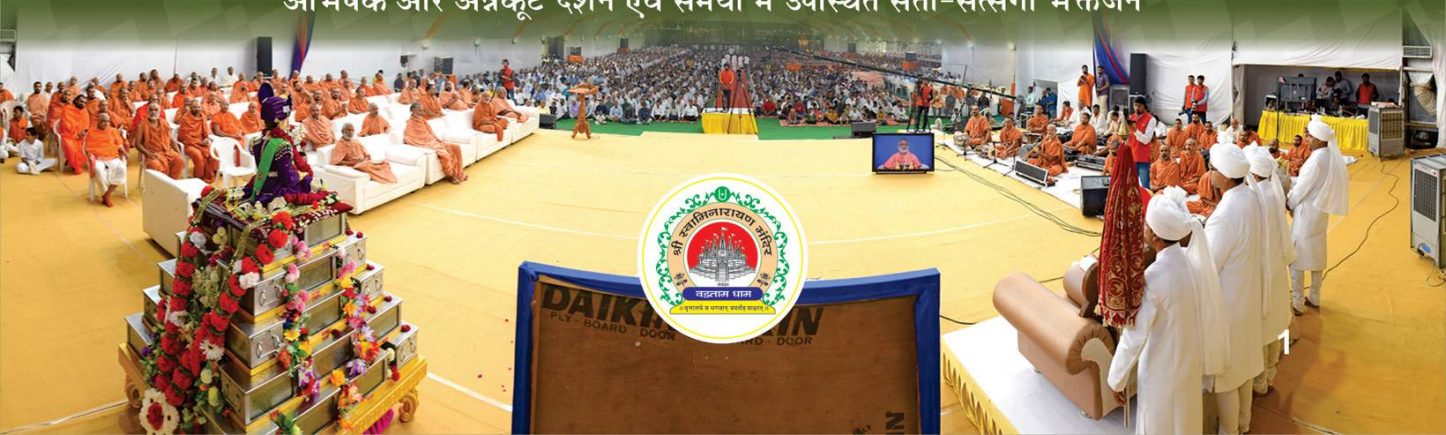

नूतन निर्मित श्री स्वामिनारायण परमधाम, यावल (जलगांव-महाराष्ट्र) मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव, प्रतिष्ठा की आरति करते वरताल पीठाधिपति प.पू. आचार्य महाराजश्री, खानदेश के वरिष्ठ संतो एवं स्थानीय भक्तजन

वरतालधाममें प्रथमबार मराठी भाषामें अयोजित श्रीमद् सत्संगिजीवन पारायण में उपस्थित प.पू. आचार्य महाराजश्री, वरताल के अग्रगण्य संतो एवं जलगांव - महाराष्ट्रसे आये भक्तजन

भगवान श्री स्वामिनारायण के चरित्र एवं उपदेश वचनोसे भरपूर श्री हरिचरित्रामृत सागर ग्रंथराज को टीटेनीयम धातुमें मुद्रित करके वरतालधाम को समर्पित करते कुण्डलधाम के संतगण तथा स्वीकार करते प.पू. आचार्य महाराजश्री एवं संतगण, श्री हरि की स्वाभाविक चेष्टा का 3D एनिमेशन में वरतालधामसे प्रसारण

आध्यात्मिक उन्नति का सर्वांग विकास हेतु वडताल संस्थान का त्रिमासिक

स्वामिनारायण संदेश

क्रम	लेख सामग्री एव लेखक	पृष्ठ
०१	**सर्वोपरी भगवान श्री स्वामिनारायण** ले. शा. अनन्तप्रकाशदासजी स्वामी	०४
०२	**बुरहानपुरमें भगवान श्री स्वामिनारायण - २** पंकज घनश्याम शाह	०६
०३	**श्री वड़तालधाम की महिमा** प्रो. हरेन्द्रभाई भट्ट	०८
०५	**चिंतन सुवाक्य** संपादक : सद्. ब्रह्मस्वरुपदासजी स्वामी	१०
०५	**विवेक प्रबोध** प.पू. धर्मप्रकाशदासजी स्वामी	११
०६	**भक्तियोग** साधु पूर्णवल्लभदास	१२
०७	**'स्वामिनारायण महामन्त्र महिमा'** सा. सर्वमंगलदास	१४
०८	**रस दर्शन रसो वै सः** पा. श्रीलालजी भगत	१६
०९.	**तब ही भगवान रक्षा करतें है ।** साधु अमृतवल्लभदास	१७
१०.	**ऐतिहासिक हिंडोला उत्सव-२०१८, वडतालधाम** प्रा. हरेन्द्रभाई भट्ट	१९
११.	**सत्संग समाचार**	२०

प्रकाशित कर्ता

श्री स्वामिनारायण मंदिर, वडताल संस्थान्

ता. नडियाद, जि.खेडा, गुजरात, ३८७ ३७५

Ph. +91 268 - 2589728,776

email : vadtaldhamvikas@gmail.com

Web Site : www.vadtalmandir.org

वर्ष - २ अंक - १, जनवरी - २०१९

- : प्रेरणा :-

श्री लक्ष्मीनारायणदेव पीठाधिपति

प.पू.ध.धू.१००८ आचार्यश्री राकेशप्रसादजी महाराज

-: स्वामिनारायण संदेश :-

हिन्दी त्रिमासिक पत्रिका

- : प्रकाशक :-

प.पू.सद्.शा.श्री घनश्यामप्रकाशदासजी स्वामी

मुख्यकोठारीश्री - वडताल मंदिर

-: मेनेजींग तंत्रीश्री :-

डॉ. शास्त्री संतवल्लभदास - Ph.D

शास्त्री पूर्णवल्लभदास

-: तंत्रीश्री :-

श्री हरेन्द्र पी.भट्ट - विद्यानगर

-: मूल्य :-

वार्षिक : १५० पंचवार्षिक : ६००

कीर्तन

संत जन सोई सदा मोई भावे,

देह ईन्द्रिय अरु मन आदिकके, संगमें नहीं लपटावे...संत०

काम क्रोध अरु लोभ मोह वश, होय न मन ललचावे;

मेरो हि ध्यान रटन मुख मेरो, सो तजी अन्य न जावे...संत०

क्षर अक्षर अरु अक्षर परकी, सबही समज उर लावे;

सब गुन पूरन परम विवेकी, गुनको मान न आवे...संत०

पिंड ब्रह्मांडसे पर निज आतम, जानीके मम गुन गावे;

मुक्तानंद कहत युं मोहन, सोई जन संत कहावे...संत०

सर्वोपरी भगवान श्री स्वामिनारायण

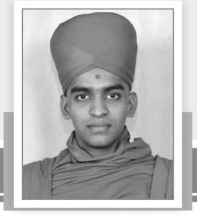

ले. शा. अनन्तप्रकाशदासजी स्वामी

भारतीय संस्कृति दुनिया की सारी संस्कृतियों मे सर्वश्रेष्ठ संस्कृति है। विश्व के इतिहास में कितनी संस्कृतियाँ आयी, उत्पन्न हुई, विकसित हुई और काल के गर्भ में विलीन हो गई। परंतु भारतीय संस्कृति अनेकविध विरोधों के बिच विपरीत काल बल के सामने भी अणनम रही है। क्योंकी उसके पय्यो में धर्म रहा है। और उसकी रक्षा स्वयं पुरषोत्तम नारायण करते है।

भगवान श्रीकृष्णने गीता में कहा –

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ॥

जब जब धर्म की ग्लानि होती है। अधर्म की वृद्वि होती है। तब दुष्टो के विनाश के लिए और धर्म की स्थापना के लिए मैं अवतार धारण करता हुं।

भगवान स्वामिनारायण वचनामृत में परमात्मा के विविध अवतारो का कोई विशेष ही उद्देश्य बताते है।

एक बार भगवान स्वामिनारायण कारियाणी में बिराजमान थे। प्रश्नोत्तरी चल रही थी।

भगवान स्वामिनारायण ने परमहंसो को प्रश्न किया, 'भगवान अवतार धारण किये बिना ही जीवात्मा का कल्याण करने में समर्थ है। संकल्पमात्र से असुरो का संहार कर सकते है। सप्तर्षि इत्यादी ऋषियों के माध्यम से धर्म कि स्थापना भी करवा सकते है। तो फिर भगवान को अवतार धारण करनेका प्रयोजन क्या है ? यदि भगवान अवतार धारण किये बिना यह कार्य नहीं कर सकते तो भगवान उतने असमर्थ कहे जाएगे।' सभा में बैठे सभी मुनियों ने उत्तर किया परंतु प्रश्न का समाधान नहीं हुआ। तभी सभी संतो ने भगवान से हाथ जोडकर प्रार्थना की, 'हे भगवन्। इस प्रश्न का समाधान आप ही किजीए ?'

भगवान स्वामिनारायण ने कहा, 'भगवान के प्रति अत्यंत प्रीतिवाले भक्त की भक्ति को आधीन हो कर भक्त को सुख देने के लिए भगवान भक्त की जैसी इच्छा हो वैसे स्वरूप धारण करते है। और भक्त के सभी मनोरथ पूर्ण करते है।'

'इसलिए अपने प्रेमी भक्तो के मनोरथ पूर्ण करना यही भगवान के अवतार धारण करने का प्रयोजन है। साथ में असंख्यात् जीवात्माओ का उद्धार, असुरो का संहार और धर्म की स्थापना करते है।' (वच.का – ५)

अवतार एक है या अनेक ?

शास्त्रो में दशावतार या चोबीस अवतारो का वर्णन होने से लोगो के मनमें एक भ्रांति स्थिर हुई है, कि भगवान के अवतार सीमित होते है। परंतु वास्तविकता यह है कि, 'जब जब जैसे स्वरूपो की आवश्यकता हो तब तब परमात्मा देवताओ के स्वरूपमें, मनुष्य के स्वरूपमें अरे.... जलचरो के स्वरूप में भी अवतार धारण करते है।' श्रीमद् भागवत में कहा गया है....

अवताराः हयसंख्येयाः हरेः सत्वनिधेर्द्विजाः।
यथाविदासिनः कुल्यां सरसः स्युः सहस्त्रशः ॥
(भा.स्कं-१, अ-३ श्लो-२६)

जैसे विशाल जलस्त्रोत में से हजारो झील निकलते है वैसे सत्वशील श्री हरि के स्वरूपो में सें सेंकडो अवतार प्रगट होते है और लीन हो जाते है।

भगवान स्वामिनारायण के प्रति विविध मान्यताएँ

भगवान स्वामिनारायण के प्रति समाज में अनेक विविध मान्यताएँ प्रचलित है। भगवान स्वामिनारायण के प्रति तरह – तरह की बाते होती है, बहुंत से लोगो के मन में भ्रांति है कि 'दशावतार या फिर चोबीस अवतारो में भगवान स्वामिनारायण कि गणना नहीं होती तो उन्हे भगवान किस आधार पर कहा जा सकता है ? कोई उन्हें समाज सुधारक मानते है, कोई उन्हे बडे संत के रूप में मानते है, तो कोई उन्हे धर्मप्रवर्तक महापुरुष मानते है। कोई उन्हे पूर्ण पुरषोत्तम नारायण मानकर उनकी उपासना करते है।'

भगवान श्री राम, भगवान श्री कृष्ण आदि अवतार और अन्य अनेको महापुरुष भी ऐसी विविध मान्यताओ से बाहर नहीं है।

परमात्मा के पूर्व हुए सभी महान अवतारों मे उनके जीवन अन्तर्गत किसीने भगवान के रूप में स्विकार किया गया हो वैसे बहुत से कम लोग है। जैसे-जैसे समय पसार होता गया वैसे-वैसे लोंगो के हृदय में भगवान के रूप में स्थिर होते गये। जिस में रामायण और श्रीमद् भागवत का बडा योगदान है। परंतु आश्चर्य कि तो यह बात है कि, 'भगवान स्वामिनारायण को उनके जीवन अन्तर्गत ही लाखो

मनुष्यों ने उन्हे भगवान के रूप में स्वीकार कर लिया था। उनकी पूजा की, उनकी उपासना की थी। अपना तन-मन-धन सब समर्पित कर दिया था। अपने नाडी प्राण भगवान स्वामिनारायण के हाथों मे सोंप दिये थे। ऐसी सहजानंद स्वामी में क्या शक्ति थी?'.

भावनगर सें लाडुदानजी जो भगवान स्वामिनारायण की परीक्षा करने के उदेश्य से गढपुर में प्रवेश कर रहे थे। तब मन में उन्होंने विविध तीन प्रकार के संकल्प किये कि, **'यदी भगवान स्वामिनारायण पूर्ण पुरुषोत्तम नारायण है, तो मुझे मेरे नाम से बुलाये। दुसरा संकल्प किया, 'यदि वे भगवान है तो उनके पास श्रीमद् भागवत ग्रंथ का वांचन हो रहा हो'। 'तीसरा संकल्प किया यदि वे सर्वेश्वर नारायण है तो सामुद्रिक शास्त्र के अनुसार उनके चरणाविंद में सोलह चिन्ह हो।'**

गढपुर में दादा खाचर के दरबार में प्रवेश करते ही भगवान स्वामिनारायण बोले, 'पधारिये लाडुदानजी' लाडुदानजीने पास जा कर देखा कि, 'श्रीमद् भागवत ग्रंथ का वांचन हो रहा है। और जहाँ लाडुदानजी वंदन करने के लिए नीचे झुके तो, भगवान स्वामिनारायण ने अपने चरणों को पसारा और लाडुदानजी को भगवान स्वामिनारायण के चरणाविंद में सोलह चिन्हो के दिव्य दर्शन हुए।' लाडुदानजी को निश्चय हुआ कि, 'भगवान स्वामिनारायण स्वयं पूर्ण पुरुषोत्तम नारायण है। संकल्पमात्र से लाडुदानजी समाधि में लीन हुए। समाधि से बाहर आकर शीघ्र कवि लाडुदानजी ने तुरंत छंद बनाया -'

'एही मच्छ एही कच्छ, एही सूकुर तनु धार्यो;
एही बने नरसिंह, दुष्ट हरनाकंस मार्यो.
एही वामन वपु कीन, लीन पद तीन भुवनत्रय;
एही फरसीधर राम, एही रघुपद किय जग जय.
एही कृष्ण बुद्ध नकलंक, एही तेही भेटन भव भ्रम टले;
कितनेक रूप लाडु कहे, सो यह सहजानंद मिले.'

लाडुदानजी भगवान के श्री चरणों मे गिर पडे, आंखो में से अश्रुओ की धाराये बहने लगी, और कहा, 'हे स्वामिनाथ। मुझे आप की सेवा में रखो.' उन्होंने भगवे वस्त्र धारण किये। वही हमारे 'सद्गुरु ब्रह्मानंद स्वामी' ऐसे तो अनेकानेक दिव्य चरित्रो के दिव्य दर्शन हमारे संप्रदाय में होते है।

बीशप हेबर जब नडीयाद में श्रीजी महाराज सें मिलने आये तब उन्होंने देखा कि सहजानंद स्वामी के सामने काठी दरबार, राजपूतो, ठाकर भक्त, मुस्लिम, पारसी को भी देखा, तब उन्होंने अपनी डायरी में नोंध ली की 'सहजानंद स्वामी के साथ में जो लोग थे उनमें सभी जाती के, ज्ञाति के, धर्म के लोग थे और वे सब भगवान स्वामिनारायण के आश्रित थे। और वे सब ऐसे रहते थे मानो सब सहोदर हो। ये सहजानंद स्वामी कि महानता है।'

अनेकानेक रहस्यभरी दिव्य चेष्टाओ से नर-नारीयों के चित्त को आकर्षित करनेवाले, ब्रह्मचर्य आश्रम के पुनःस्थापक, प्रामाणिकता और आध्यात्मिकता के पोषक, व्याससिद्धान्त के प्रबोधक ऐसे भगवान स्वामिनारायण थे। यदि भगवान के अवतार पृथ्वी पर होते है, तो बेशक भगवान स्वामिनारायण को अवतार की संज्ञा दि जा सकती है।

स्वयं परब्रह्म पुरुषोत्तम नारायण

भगवान स्वामिनारायण के अवतार धारण करने के विषय में भविष्यवाणी हमारे बहुत से वैदिक शास्त्रो में भी दी गयी है।

ब्रह्माण्ड पुराण में कहा गया है....

दत्तात्रेयः कृते युगे त्रेतायां रघुनन्दनः।
द्वापरे वासुदेवः स्यात् कलौ स्वामी वृषात्मजः॥

सत्ययुग में दत्तात्रेय, त्रेतायुग में रघुनन्दन, द्वापर में वासुदेव और कलियुग में धर्मपुत्र स्वामिनारायण प्रगट होंगे।

पद्मपुराण में कहा गया है.....त्

पाखण्डबहुले लोके स्वामिनाम्ना हरिः स्वयम्।
पापपङ्कनिमग्नं तज्जगदुद्धारयिष्यति॥

पाखंड से भरपूर इस लोकमें स्वामी नामके श्रीहरि स्वयं परमात्मारूप में प्रगट होकर पापरूपी किचड में डुबे हुए इस जगत का उद्धार करेंगे।

विश्वकसेन संहिता में कहा है -

भूम्यां कृतावतारोयं सर्वानेतान् जनानहम्।
प्रापयिष्यामि वैकुण्ठं, सहजानन्द नामतः॥

मैं सहजानन्द नामसे भूमि पर अवतार धारण करुंगा। और सर्व लोको को माया के अवरोधों से पर अक्षरधाम ले जाउंगा।

भगवान स्वामिनारायण ने 'वचनामृत' में कहा - 'एक जो ब्रह्ममय तेज है, उसमें जो मूर्ति है, उसमें जो नारायण है, ये में स्वयं हूँ। आप सभी कि जो पुरुषोत्तम नारायण की उपासना है, वो आज आप सभी को नयनगोचर हो रही है। मैं ही आप सभी का उपदेशक, गुरु, आप सभी को इष्टभाव से उपासना करने योग्य हूं। मेरे सभी अवतार, चरित्र, गुण, किर्तन और नाम ये सभी परम कल्याणकारी है।'

संप्रदाय में जीवुबा और लाडुबा जैसे व्यक्तित्व, गोवर्धनभाई और पर्वतभाई जैसे निरावरण द्रष्टिवाले महापुरुष, जब सहजानन्द स्वरूप को अपने हृदय के अंदर समाविष्ट करते हो, तब उनकी द्रष्टि हमे बतलाती है, ये सहजानन्द स्वामी **'स्वयं साक्षात् नारायण'** है। आज भी संप्रदाय में सिद्ध पुरुष है। उन्हें भी साक्षात्कार होते है। उनके विधानो से भगवान पहचाने जाते है। तो ये सहजानन्द, धर्मपुत्र, हरिकृष्ण, स्वामिनारायण ये तत्त्व कौन है?

अंत मे फलित है कि **'साक्षात् परब्रह्म पुरुषोत्तम नारायण है।'**

बुरहानपुरमें भगवान श्री स्वामिनारायण २

पंकज घनश्याम शाह

कांटा निकालने वाले को अलौकिक आश्चर्य

लडाई समाप्त होने के बाद रामप्रतापजी और घनश्यामजी बैल गाडी मे वापस अयोध्या जाने के लिए निकले । रास्ते में घनश्यामजी गाडी में से कांटो की झाडी में गिर गये जिससे उनके शरीर में अनेक कांटे चुभ गए । यह देख रामप्रताप भाई बहुत दुःखी हुए और संकल्प किया कि मेरा घनश्याम ठीक हो जाएगा तो मै १५ - २० ब्राह्मणों को भोजन करवाऊंगा । फिर भाई बुरहानपुर से एक घंसिये (कांटा निकालने वाला) को ले आये ।

जब वह घंसिया कांटे निकालने गया तब घनश्यामजी ने अपने शरीर से अलौकिक तेज प्रकट किया और उस तेज के समूह मे चतुर्भुज नारायण के रूप में उस घंसिये को दर्शन दिए । अपार तेज के समूह में नारायण के दर्शन कर वह घंसिया अपना तन भान भूल गया । दूसरी तरफ रामप्रतापजी चिंतित होकर उस घंसिये को कहने लगे कि - ''तू मेरे घनश्याम के कांटे निकाल, तो तुझे पांच-दस रूपये दूंगा ।'' तब घंसिया बोला - ''हे भाई, यह कोई मनुष्य नहीं परन्तु कोई बडे देव है, मुझे ईनके शरीर में एक भी कांटा नहीं दिखता है।''

रामप्रतापजी को तो तब भी कांटे दिख रहे थे । उन्हें घंसिये की बात पर विश्वास नहीं हुआ तो गाडी चला कर अगले गांव गए । वहां से एक घंसिये को बुलाया तो घनश्यामजी ने उसे भी वैसा ही ऐश्वर्य बताया । ऐसे कई घंसियो को महाराज ने तेजोमय रूप बताया । इससे रामप्रताप भाई को बहुत आश्चर्य हुआ । ऐसा दो दिन तक रहा, फिर घनश्यामजी जैसे थे वैसे हो गए परंतु यह देखकर भी रामप्रताप भाई को घनश्यामजी में भगवान का निश्चय नहीं हुआ । भगवान का निश्चय सच्चे संत के समागम से ही हो सकता है।

अद्‌भुतानंद स्वामी नी वातो - वात २

नीलकंठ वर्णी का आगमन और केनोपनिषद्

'' नीलकंठोडपि ततो बुरानपुरनगरं ययौ ''

भगवान घनश्याम अपने घर का त्याग कर असंख्य जीवो का उद्धार करने के लिए ग्यारह वर्ष की आयु में वन विचरण के लिए निकल पडे । वन विचरण में घनश्यामजी नीलकंठ वर्णी के नाम से प्रसिद्ध हुए । सात वर्ष तक कठिन पर्वतों, नदियों, घोर वनों मे विचरण करते हुए नीलकंठ वर्णी मुमुक्षु जनों को ढूंढते हुए बुरहानपुर में तापी नदी के किनारे राजघाट पहुंचे ।

वहाँ एक वटवृक्ष के निचे एक पवित्र ब्राह्मण को देखकर उसे मुमुक्षु जानकर नीलकंठ वर्णी उसके पास गए । वर्णी को सामने देखकर वह तुरंत खडा हो गया और दोनों हाथ जोड कर स्तुति करने लगा । उस ब्राह्मण के मन में बहुत समय से केनोपनिषद् का रहस्य जानने की इच्छा थी । उससे प्रसन्न होकर उसके संकल्प को जानकर अंतर्यामी श्रीहरि उसे केनोपनिषद् का रहस्य समझाने लगे।

''हे ब्राह्मण ! सुनो, अतिदुर्लभ मनुष्य जन्म धारण करके भी जिसने वैदिक धर्म का पालन कर परमात्मा को नहीं जाना, वह मुर्ख है क्योकि दूसरी योनियों के प्राणियों के लिए यह संभव नहीं है । सर्वव्यापक परमात्मा की शक्ति से ही सारे देहधारी शक्तिवान है और उसके बिना कुछ भी करने के लिए समर्थ नहीं है ।''

इस विषय पर केनोपनिषद् में एक दृष्टांत है । पूर्व में देवासुर संग्राम में देवताओ ने बहुत मेहनत से एक लम्बे युद्ध के बाद असुरो पर विजय प्राप्त की थी । सारे असुर पाताल में भाग गए जिससे देवताओ को अपनी शक्ति पर गर्व हो गया । तब देवताओ के अभिमान को नष्ट करने के लिए परब्रह्म तेज के समूह के रूप में प्रकट हो कर देवों के समीप गए । देवताओ ने उस तेज के स्वरुप

का रहस्य जानने के लिए अग्निदेव को भेजा।

उस तेज ने पास आए अग्निदेव से परिचय पूछा तब अग्नि ने कहा कि सब कुछ भस्म करने की शक्ति वाला में अग्निदेव हूं। तब उस परब्रह्म रूपी तेज ने कहा कि यह एक सूखे घास का तिनका है, इसे भस्म करके बताइए। तब अग्निदेव ने अपनी पूरी शक्ति से तिनके को जलाने का प्रयास किया परन्तु जब तिनके को कुछ नहीं हुआ तब अग्निदेव लज्जित होकर चले आये। तत्पश्यात् वायुदेव गए परन्तु वह भी अपनी शक्ति से उस तिनके को हिला नहीं सके और निराश होकर वापस आ गए। तब स्वयं इंद्र गर्व रहित होकर सब देवताओं के साथ परब्रह्म तेज के पास गया तो तेज अंतर्ध्यान हो गया। सारे देवता उदास हो गए और इस घटना का रहस्य माता पार्वती से पूछने गए।

माता पार्वती ने कहा- हे इन्द्रादिक देवताओं, जिनकी शक्ति से आप सब कर्म करने के लिए शक्तिवान हो और जयपराजय के सभी कार्यों में जिनकी इच्छा का प्रवर्तन हो रहा है, वह परब्रह्म शक्तियुक्त है और स्वतंत्र रूप से कर्म फल प्रदाता है। वह ब्रह्म स्वयं आप सब का गर्व नाश करने के लिए प्रकट हुए, उनके बिना कोई भी कुछ भी करने के लिए समर्थ नहीं है। यह ज्ञान पाकर सारे देवता गर्व हीन होकर परमात्मा की महिमा समझकर अपने स्थान पर लौट गए।

श्रीहरिने कहा - हे ब्राह्मण! वह ब्रह्म ही सर्वान्तर्यामी रूप में सर्व इन्द्रियों में अध्यात्म अधिभूत-अधिदेव रूप में रहे है और कभी-कभी धर्म की रक्षा करने के लिए पृथ्वी पर अवतार धारण कर जगत को पवित्र करे ऐसी लीला करते है। इसलिए साधक पुरुष को शम-दम-नियम आदि वेदोक्त साधनो से अपने चित्त को एकाग्र करके हृदय में परमात्मा का स्मरण करके निष्पाप हो कर धीरे-धीरे मोक्ष की ओर अग्रसर होना चाहिए।

यह अद्‌भुत ज्ञान प्राप्त कर वह पवित्र ब्राह्मण प्रफुल्लित हो गया और वर्णीराज को साष्टांग दंडवत् करने लगा। उसने प्रभु से प्रार्थना की - हे प्रभु- आप स्वयं परब्रह्म हे जिन्होंने भक्तो के दुखो का नाश करने के लिए, अतिशय दया कर मनुष्य शरीर धारण किया है। हे प्रभु! मेरे जीवन को पावन करिए और मेरा कल्याण कीजियेगा। यह कहकर ब्राह्मण वहां से नगर में चला गया और नीलकंठ वर्णी राजघाट पर ध्यान में बैंठ गए।

मानवेभ्य उपदेशमदाद् यो घंटिकायतिनिदर्शनरूपम् ।
प्राप तीर्थं सुजनार्दनसंज्ञं मां स रक्षतु बुरानपुराप्त : ॥

श्रीहरिवनविचरणकाव्यं - ३१

सुभाषित रस

नमन्ति फलिनो वृक्षाः नमन्ति गुणिनो जनाः।
शुष्ककाष्ठश्च मूर्खाश्च न नमन्ति कदाचन्॥

भावार्थ - जिस प्रकार फलों से लदी हुई वृक्ष की डालियां झुक जाती हैं, उसी प्रकार सद्‌गुणो से परिपूर्ण सज्जन सदैव विनम्र होते है किन्तु मूर्ख लोग उस सूखी लकडी के समान होते है जो कभी नहीं झुकती।

न धैर्येण विना लक्ष्मीर्न शौर्येण विना जयः।
न ज्ञानेन विना मोक्षो न दानेन विना यशः॥

भावार्थ - धैर्य के बिना धन, वीरता के बिना विजय, ज्ञान के बिना मोक्ष और दान के बिना यश प्राप्त नहीं होता है।

दातृत्वं प्रियवक्तृत्वं धीरत्वमुचितज्ञता।
अभ्यासेन न लभ्यन्ते चत्वारः सहजा गुणाः॥९॥

भावार्थ - दानशीलता, मधुरभाषण, शूरत्व और पाण्डित्य-ये चारों गुण स्वाभाविक होते है, इन्हें अभ्यास से प्राप्त नहीं किया जा सकता। **विमर्श**-निरन्तर अभ्यास से मनुष्य अनेक गुणों को प्राप्त कर सकता है परन्तु अभ्यास से सब-कुछ प्राप्त नहीं हो सकता। कुछ गुण ऐसे होते है जो स्वाभाविक होते है। उपर्युक्त श्लोक में ऐसे ही कुछ गुणों का वर्णन किया गया।

अर्था भवन्ति गच्छन्ति लभ्यते च पुनः पुनः।
पुनः कदापि नायाति गतं तु नवयौवनम्॥

भावार्थ - धन मिलता और नष्ट होता रहता है, नष्ट होने के बाद फिर से प्राप्त हो जाता है, परन्तु जवानी एक बार निकल जाये तो कभी वापस नहीं आती, अतः क्षमता, जोश एवम् महाशक्ति से सम्पन्न यौवन का एक एक अमूल्य पल ऐसे सत्कर्मो में व्यय करना चाहिए कि शरीर समाप्त होने के बाद भी समाज और राष्ट्र हमें याद करता रहे।

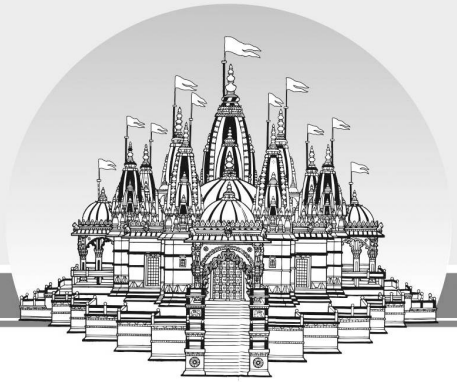

श्री वड़तालधाम की महिमा

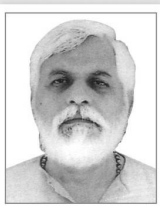

प्रो. हरेन्द्रभाई भट्ट

व्रतपुरी की महिमा कहि न जाए, कभी मुख शेष सहस्त्र कल्प गाई ।
वृष सुत की गादी जहां है, त्रिभूवन तत्व अनेक तीर्थ वहां है ।

(हरिलीलाकल्पतरु में वड़ताल की महिमा)

वड़तालधाम में सर्वावतारी भगवान श्री स्वामिनारायण बारंबार यहां निवास करते थे ईससे यह धाम धन्य है।

जो भक्तजन वृत्तालयपुर यानी वड़तालधाम में बिराजमान लक्ष्मीनारायण आदिक देवों के नित्यदर्शन करता है वह निश्चय हि मुकित पाता है। इसीलिए उन्हे धन्य है। जन्म से लेकर जिस मानव ने कभी पूण्य नहीं किया है वह वृत्तालय के दर्शनमात्र से ही पुण्य करनेवाला होता है।

जो मनुष्य केवल वड़तालधाम के दर्शन करते है वह सभी तीर्थो के दर्शन का फल प्राप्त करते है।

अन्य तीर्थो में जीवनपर्यंत निवास करनेवाले मनुष्यों को जो फल प्राप्त होता है । वह फल वृत्तालय में निवास करनेवालों को केवल एक ही दिन में प्राप्त होता है।

जो जन वृत्तालयपुर में पंद्रह दिन, महिना या साल निवास करते है उनके महापुण्य का वर्णन करना भी सरल नहीं है।

ईस पवित्रधाम में आनेवाले हरिभक्तों के सहस्त्र जन्मों के पाप वृत्तालयपुर नाश करता है, इसलिए अपने श्रेय की ईच्छा रखनेवाले मनुष्य को यह पुर सेवा के योग्य है।

श्री लक्ष्मीनारायण देव के दर्शन के ईच्छुक ब्रह्मादि देव वृतालयपुर के दर्शन करने नित्य आते हैं।

वृत्तालयपुर के दर्शन करने के लिए नित्य ऋषिमुनि, योग निपुण कवि, आदि योगेश्वर नारदादि ऋषिगण, गंधर्व किन्नर आते है।

साधुजनों के निवासरूप सर्वार्थ सिद्धि देनेवाला यह दिव्य स्थल कलियुग में मुक्ति का एकमात्र पवित्र द्वार है।

इस स्थान में प्रवेश करनेवाले मनुष्य के पापों का नाश होता है। संसाररुपी अग्नि में तप्त हुए अंगोवाले जन यहां श्री लक्ष्मीनारायण देव के दर्शन प्राप्त कर शांति प्राप्त करते है।

जो पंछी एवम् प्राणी इस पुर में मृत्यु प्राप्त करता है वह भी मुक्ति प्राप्त करता है।

नदियों में समुद्र, पर्वतों में मेरु, इन्द्रीयों में मन, शरीर में प्राण सभी सितारों में सूर्य, देवताओ में श्रेष्ठ जगतपति महाविष्णुजी, समग्र द्रव्यो में अत्यंत शोभायमान चिंतामणि जिस तरह उत्तम है उसी प्रकार यह वृत्तालयपुर ही इस लोक के सभी पूण्य क्षेत्रो में उत्तमोत्तम है।

जो जन वृत्तालयपुर का मन से भी चिंतन-स्मरण करता है उसके शत जन्मो के पापों का नाश होता है।

जो जन 'वृत्तालय' इस प्रकार केवल नाम उच्चारण करता है उसके सप्तजन्मों के पापों का नाश होता है।

चंद्रग्रहणों मे कोटी धेनुओं के दान कुरुक्षेत्र में अर्पण करने से जो पूण्य प्राप्त होता है वही लक्ष्मीनारायणादिक देवों

के एक दिन के क्षणमात्र दर्शन से प्राप्त होता है।

जिस तरह अमावस्या में होते सूर्यग्रहण में सहस्त्र धेनुओं के दान करने से अथवा यज्ञों के समूह से जो फल प्राप्त होता है वह श्री लक्ष्मीनारायणदेव के इस स्थान में एक दिन यथाविधि निवास करनेवाले एवम् श्री लक्ष्मीनारायणादि देवों के दर्शन करनेवाले मनुष्यों को उतना फल मिलता है।

जो मनुष्य वृत्तालय में प्रीतिपूर्वक आकर लक्ष्मीनारायणादि देवों के दर्शन हेतु केवल सोचता है उसी समय उसके पितृओं की मुक्ति होती है और वह नर्क से स्वर्ग प्राप्त करते है ।

जो जनसमूह इस दिव्य वृत्तालयपुर में यात्रा करने हेतु आते है उनको कदम कदम पर अश्वमेघयज्ञ का फल अवश्य प्राप्त होता है। जो दूसरों को प्रेरणा करते है वह मनुष्य राजसूय यज्ञ का फल प्राप्त करता है।

जो मनुष्य यहां यात्रा करने आनेवाले मनुष्य को द्रव्य देता है वह मनुष्य सहस्त्र धेनुओं के दान देने से जो फल मिलता है वह प्राप्त करता है।

जो जन यहां आनेवाला हो लेकिन मार्ग में चलने के लिए असमर्थ हो उसे बैठने के लिए साधन देता है वह काशी की सो यात्रा से उत्पन्न होनेवाले फल को प्राप्त करता है।

श्रीहरि कहते है कि, 'वैकुंठलोक में मूर्ति है वैसी ही यह मूर्ति है।' ब्रह्मचर्य का पालन कर सो साल तक चारों धाम में घुमे उससे एकबार यहाँ दर्शन करें उसको अधिक फल मिलता है वैसा दैवत्व इस मूर्ति में है। मन के भाव बिना भी दर्शन करेगा वह पुनः मनुष्य शरीर प्राप्त कर तथा सत्संग करके अविनाशी सुख प्राप्त करेगा।

यहां यात्रा करने आते क्षुधातुर यात्रीको जो अन्न-जल देता है वह मनुष्य को गयाजी में श्राध्ध करवाने तुल्य का फल मिलता है।

यहां आनेवाले चलते यात्री कों को केवल जल पिलाता है वह मनुष्य सहस्त्र प्याउ का फल पाता है।

वड़तालधाम की यात्रा में आनेवाले मनुष्य को जो मनुष्य श्री स्वामिनारायण की प्रसन्नता हेतु अपेक्षित वस्तु देता है उसके सर्व मनोरथ सिध्ध होते है।

मार्ग में चलते जो मनुष्य श्रीहरि की कथा सुनता है अथवा उसका गान करता है। उस मनुष्य से ज्यादा धन्य कोन है।

यह वृत्तालयपुर त्रिलोक की शोभारूप है। क्योकि इस धाम में श्री लक्ष्मीनारायण देव की मूर्तियां बिराजमान है।

जिनके दोनों चरणकमल मुनिओं के द्वारा चिंतन करने योग्य है ऐसे श्री धर्म के पुत्र श्रीहरि ने इस रमणीय (वृत्तालय) पुरी को अपनी राजधानी बनाई है, इस वृत्तालयपुरी की समस्त भूमि श्रीहरि के चरणों से अंकित हुई है। जो देंवों के दर्शनमात्र से भक्तजन अपने प्राणों से भी अधिक अनुपम प्रेम के स्थानभूत श्रीहरि का स्मरण करते है।

यह शुभस्थान निर्गुण है अतः सर्वोत्तम एवम् अतिधन्य है क्योकि इस पवित्रभूमि पर श्रीहरि ने अनेकोबार उत्सव किए है। जिनके दर्शन आनंद देनेवाले है एसे श्री स्वामिनारायण की सुंदर रज सभी पापों का छेदन करनेवाली है ब्रह्मादि ईश्वर तथा भक्तजन आनंदपूर्वक अपने शीश पर रज धारण करते है।

दिव्य, ऐश्वर्य,दया आदि गुणों के महासागर, अक्षरादि मुक्तों के एक स्वामी सभी अवतारों के एक कारणभूत, सभी आपदाओं का नाश करनेवाला जिसका आश्रय है एसे धर्मपुत्र राजाधिराज अपने एकांतिक जन जिनके नित्यदर्शन करते है वह प्रभु स्वामिनारायण हरिकृष्ण नाम से आज भी इस मंदिर में प्रत्यक्ष बिराजमान है।

ईहलोक तथा परलोक में जो मनुष्य को दुर्लभ है वह मुक्ति नित्य इस पुर में है अतः श्रीहरि के चरणारविंद से अंकित वृत्तालयनगरी पूरे लोक में सर्वोत्कृष्ट है।

हे राजन्, इस तरह आपको वृत्तालयपुर की महिमा मेरी बुद्धि क्षमता के अनुसार कही जो भी मनुष्य इस वड़तालधाम की महिमा भक्तिपूर्वक सुनता है अथवा उसका पाठ करता है वह मनुष्य के सर्व पापों का नाश होता है और उसके सर्व मनोरथ सिध्ध होंगे।

(श्री हरिलीलाकल्पतरु - स्कंध ९-च.३६,)

चिंतन सुवाक्य

सद्. ब्रह्मस्वरुपदासजी स्वामी

- हँसी विहिन वदन और अश्रु विहिन नयन दोंनो एक जैसी वेदनामय है।
- अच्छे संस्कार कोई मोल में से नहीं, किन्तु खानदान परिवार के माहोल में से प्राप्त होते है।
- किसीके घर में फूलदानी, मच्छरदानी, अत्तरदानी हो मगर खानदानी न हो तो सब व्यर्थ है।
- प्रामाणिकता विहिन धार्मिकता प्राण विहिन कंकाल समान है।
- जायदाद छल करके प्राप्त की जा सकती है किन्तु संस्कार छल करके प्राप्त नहीं हो सकते।
- जिस रास्ते पर चलते कपडे मेले हो तो हम उस रास्ते पर चलना छोड देंते है , किन्तु जिस रास्ते पर चलते हमारा मन बिगडे तो उस मार्ग पर चलना क्यों नहीं छोड देते?
- जल का अकाल तो एक साल तक असर करता है, जब संस्कारो का अकाल तो पुरी पीढी तक असर करता है।
- आदमी कितना पढा लिखा है वह उसके सर्टिफिकेट पर से पता चलता है किन्तु संस्कारी कितना हुआ है वह तो उसके आचरण पर से ही पता चलता है।
- पैसों का आगमन मनुष्य के गृह में तबदीली ला देता है – उसी तरह संस्कार का आगमन मुमुक्षु के जीवन में बदलाव ला देता है। बिना बेलेन्स का बेंक का चेक व्यर्थ है, उसी तरह बिना संस्कार की जींदगी व्यर्थ है।
- भोजन में संयम रखो और भजन में स्वयं को रखो।
- बिना संस्कार की विद्या नींव विहिन इमारत है।
- यह नैतिक अध:पतन के युग में अंगत चारित्र्य निष्कलंक रखना यह एक सिद्धि है।
- सफल बनने के लिए आपके पास बहुत कुछ होना आवश्यक है, किन्तु अच्छे बनने के लिए आपको खुद अच्छे होना जरुरी है।
- सोने की परीक्षा अग्नि में होती है, मनुष्य की त्याग में और भ्राता की बटवारें में होती है।
- एक अच्छा विचार अनेक विचारों को दूर कर सकता है।
- भूतकाल हमारे जीवन का भविष्य निश्चित नहीं कर सकता, अत: उसका विस्मरण कर वर्तमान को अच्छा बनावो यानि भविष्य अपने आप अच्छा हो जाएगा।
- मर्यादा का अस्वीकार ही मनुष्य को सरलता से मर्यादारहित बनाता है।
- नकारात्मक विचार मस्तिष्क की थकान का बडा कारण है, क्षमा सद्गुण है, बहुत कम लोग उसका विकास करते है । किन्तु मानसिक शांति के लिए वह आवश्यक है।
- व्यक्तिगत श्रेष्ठता के लिए आंतरिक शांति आवश्यक है।
- यदि मनुष्य गिरता है तो केवल उसे अकेले को ही फ्रेकचर होता है किन्तु मनुष्यता गीर जाए तो पुरे समाज को फ्रेकचर होता है।
- जिस दिन हम यह बात समझ जायेंगे की सामनेवाला आदमी गलत नहीं है किन्तु उसकी सोच हमारे से अलग है। उस दिन हमारे जीवन के आधे दर्द सदैव के लिए समाप्त हो जायेंगे।
- रेलगाडी पटरी पर सुरक्षित रहती है। अनाज (खेंतो में) बाड के बीच सुरक्षित है, नदी किनारे के बीच, गहनें तिजोंरी में सुरिक्षत रहते है उसी तरह हमारा जीवन प्रभु की आज्ञा पालन से सुरक्षित रहता है।
- कारावास से अधिक कारावास की दिवारों का साया दीर्घ होता है, उसी तरह वास्तविक दु:ख की जगह काल्पनिक दु:ख नित्य ज्यादा डरावना होता है।
- मोत के बदले मोत का डर जैसे ज्यादा डरावना होता है उसी तरह निष्फलता के बदले निष्फलता का डर ज्यादा डरावना होता है।
- सच्ची शूरवीरता जीवात्मा के बंधन को तोडने में ही है।
- जो मिला है वह पसंद नहीं, और जो पसंद है वह मिलता नहीं फिर भी मिला हुआ पसंद आएगा और पसंद आया हुआ प्राप्त होगा इस भरोसो पर प्रसन्नतापूर्वक जीवन व्यतीत करते रहना

इसी का नाम जिंदगी।

- जिहवा तो जन्म लेते ही मिल जाती है किन्तु जिहवा का सदुपयोग किस तरह, किस कार्य में, किसके लिए करना यह सीखते-सीखते पुरी जिंदगी निकल जाती है।
- जो चाहिए वह प्राप्त करके ही दम लेना यह सफल मनुष्य की निशानी है परंतु जो प्राप्त हुआ है उसमें हास्य वदन रखकर जीना यही सुखी मनुष्य की निशानी है।
- दुर्जन लोग देह का दुरुपयोग करते है जब सज्जन लोग देह का, शक्ति का, समय और संपत्ति का सदुपयोग करते है।
- वर्तमान जीवन वह तो भविष्य जीवन का जन्म पत्र है। उसमें हम बेध्यान बनें तो भविष्य में होनेवाले जन्म पत्र बेकार आएगें।
- दर्द को जब रोते-रोते भोगते है तब वह होता है उससे दुगना लगता है- जब उस हंसते-हंसते भोगते है तब वह होता हैं उससे अच्छा प्रतित होता है।
- संसार की ओर बहता प्रेम वासना बनता है और परमात्मा की ओर परावर्तित होता वही प्रेम भक्ति बन जाता है।
- जीवन को कवर की तरह नही किन्तु पोस्टकार्ड के जैसे खुला रखना चाहिए जिसको कोई भी सरलता से पढ सके, समझ सके।
- सत्संग से जीवन सद्गुणों की और उपर उठता है जब कुसंग से जीवन बुरे रास्ते पर उपर उठता है।
- जागीर मिले किन्तु उसके सद्पयोग की सच्ची समझ न हो तो वह हर्षोल्लास का कारण बनने की बजाय उद्वेग का कारण बना रहता है एसी पुरी संभावना है।
- जो क्षमा दे सकता है वही अपने स्वभाव को शीतल रख सकता है।

विवेक प्रबोध

प.पू. धर्मप्रकाशदासजी स्वामी

एकादशी एवम् पूर्णिमा तथा अन्य किसी दिन भक्तजनों की भीडभाड में किसी के पैर पर पैर न गिर जाए यह सावधानी बरतनी यह भी एक विवेक है। हम जब भगवान के दर्शन कर रहे हो तब दूसरे भक्तजनों के पूजन दर्शन में हम बीच में न आए उसका ध्यान रखना, दूसरे भक्तजन ऐकाग्रता से ध्यान, माला, किर्तन करते हो तो उनको कोई विक्षेप न हो उस तरह से हमें दर्शन करने चाहिए। भगवान के सामने द्रव्य खुले हाथोंसे फेंकना यह लक्ष्मीजी का अपमान है। मंदिर में और भगवान के सामने मोबाईल पर बाते नहीं करनी चाहिऐ। देव के सामने दूसरी बातचित टाल देनी चाहिए। देव को दंडवत् प्रणाम करते समयभी दूंसरो को विक्षेप न हो उसका ध्यान रखना चाहिए। प्रदक्षिणा धीमी गति से करनी चाहिए। प्रदक्षिणा करते समय किसी भक्तजन से आगे जाते वक्त उसको विक्षेप न हो उसका ध्यान रखना चाहिए। मंदिर के प्रांगण में मिलते किसी भी संत को झुककर चरणस्पर्श करने चाहिए। जब भगवान की कथा हो रही हो तब उसमें बैठने का आग्रह रखना चाहिए।

अब बात आई भोजनालय की...

भोजनालय में जाते वक्त शांति से लाईन में जाना चाहिए। अंदर जाते ही क्रमवार थाली लेनी चाहिए। थाली लेकर शांति से लाईन में खडे रहें। जब परोसनेवाले टेबल के पास पहुंचे तो जो खाना है, और जीतना खाना है उतना ही लेकर आगे बढे। यहां किसीको विक्षेप न हो यह बात का ध्यान रहे। अगर साथ में बच्चें है तो उन्हे अपने आगे खडे रखकर परोसनेवाले सें कृपया बताये कि थोडा थोडा ही परोसे। मंदिर का भोजन प्रसादी कहलाती है इसलिए थाली में झुठा मत छोडना, क्योंकी यह अन्नपूर्णा है इनका अपमान होता है, इसलिए खाने का बिगाड़ न हो यह जरुर याद रखना। मंदिर में जल और अन्न का दुर्व्यय नहीं करना चाहिए।

मंदिर में यात्रीओं के लिए जो कमरों की व्यवस्था की गई है वहां पर भी विवेक रखना चाहिए। जैसे की कमरे में रखे गए गद्दे, तकीया, चद्दर का उपयोग सावधानी सें करना चाहिए। जब हम कमरा छोड के जा रहे है तब उसकी सफाई ठीक तरह से करनी चाहिए और गद्दे-तकीया उसके यथायोग्य स्थान पर रख देने चाहिए। ईलेकट्रीक उपकरण जैसे लाईट, पंखे की स्वीच ओफ कर देनी चाहिए। कमरें की खीडकियां बंध कर देनी चाहिए। टोयलेट-बाथरुम के नल की जांच कर लेनी चाहिए। खुले रह गये हो तो बंद कर देने चाहिए। बाहर निकलते ही कमरे को बाहर से ताला मारकर कुंची जीम्मेदार आदमी को सोंप देनी चाहिए। यह विवेक भी जरुर रखना चाहिए।

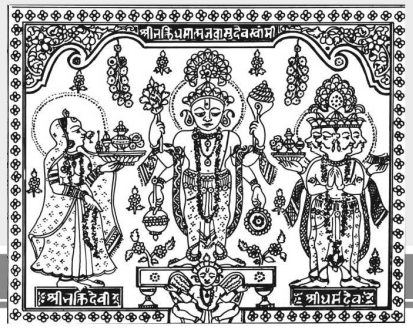

भक्तियोग

साधु पूर्णवल्लभदास

'भूतल भक्ति पदारथ मोटुं, त्रण लोक मां नावे रे....' गुजरात के भक्तकवि नरसिंह महेता रचित काव्य, भक्ति का महत्व द्योतित करता है।

यह पद को शांत चित्त से दोहराने से भक्ति का माहात्म्य हृदयस्थ होता है। जिसकी महिमा समझ में आए उस ओर सब की गति होती है यह सहज है। सद. निष्कुलानंद स्वामी द्वारा लिखित भक्तिनिधि ग्रंथ में संपूर्ण भक्तियोग आ जाता है। गीता में कहा है **'योगः कर्मसु कौशलम्'** (भ.गी.२-५०) कर्म में कुशलता उसका नाम योग है। यहां पर हमें भक्तियोग समझाना है। भक्ति स्वरूप कर्म में कुशलता उसे भक्तियोग कहेगें । भक्ति यानि 'प्रभु के स्वरूप में माहत्म्य ज्ञानयुक्त प्रकट भावना से अत्याधिक स्नेह' यह भक्ति का स्वरूप है। प्रेम पराकाष्ठा केवल भगवान में रहे तब पूर्णता आती है। भक्ति दिन प्रतिदिन परिपुष्ट होती हो, निर्विघ्न हो एवम् विशुद्ध हो ऐसा मार्ग यानि भक्तियोग। भक्ति को परिशुद्ध करने की साधना को भी भक्तियोग कहेंगे।

भक्ति मां भर्या छे भेदजी, करे छे जन मन पामे छे खेदजी ।
एक बीजानो करे छे उच्छेदजी, तेतो नथी केने उर निर्वेदजी ॥

अन्य धाराओ में व्यभिचरित प्रेम स्वरूपा भक्ति को एक धारा में लाकर, अनन्य भाव से पतिव्रता नारी की तरह एकमात्र परमात्मा में करनी चाहिए। यह साधना मुमुक्षु के लिए कठीनतम है। ऐसी कुशलता प्राप्त करना वही भक्तियोग है। अनन्य भक्ति हो किन्तु स्वहेतु अथवा सकाम हो तो उसे केवल भगवद् सुख के लिए करनी चाहिए। अर्थात् निष्काम भक्ति करना वही भक्तियोग है। अनन्य भक्ति हो वह निष्काम हो फिर भी प्रकटभाव से न होती हो, परोक्षभाव से होती हो तो उसमें हानि आती है। परोक्षभाव को मिटाकर प्रकटभाव से भक्ति करना वह भक्तियोग है।

जेटली भक्ति जन करे छे, परहरि प्रभु प्रगटने ।
तेने भक्त केवो ते भूपनी खोट्ये, जेम पाट्ये बेसार्यो मर्कटने ॥

सद्. निष्कुलानन्द स्वामी कहते है, यदी कोइ प्रगटभाव को छोडकर परोक्ष भावसे श्रीहरि की भक्ति करता हो, वह भक्त कैसा है? जैसे राजगद्दी पर राजा के अभाव में मर्कट को बैठा दिया जाये ऐसे उसकी शोभा होती है।

भगवान में प्रकटभाव, निष्कामभाव और अनन्यभाव युक्त प्रेम-भक्ति अत्याधिक होते हुए भी माहात्म्य ज्ञान के अभाव से ऐसी नवयौवना भक्ति अकाल मृत्यु को प्राप्त होती है। सारंगपुर के पंचम् वचनामृतम् में श्रीहरि कहतें है, 'माहात्म्य विहीन भक्ति यदि ज्यादा लगती हो, फिर भी अंत में नष्ट हो जाती है। जैसे दस-बाराह साल की कन्या हो ओर उसे क्षय की बिमारी हो जाए तो वह बालिका युवा होनें से पहले ही मानो मृत्यु प्राप्त हो जाती है । उसी तरह जिसे माहात्म्य विहीन भक्ति हो फिर भी वह नष्ट हो जाती है।'

सद्.निष्कुलानंद स्वामी लिखते है, 'भक्ति पर भय कैसे रे संतो भक्ति पर भय कैसे... तुटा फिर भी सुवर्णकलश....' यहां पर स्वामी भक्ति को अविचल, निर्विघ्न बताते है, किन्तु भक्तिमार्ग की निर्भयता तभी सार्थक हो जब वह माहात्म्य ज्ञानयुक्त हो । महिमा विहीन केवल भावप्रधान भक्ति अंत में नष्ट हो जाती है । ऐसी उछलती कूदती भक्ति अंत में हास्यास्पद हो जाती है। माहात्म्य की दिशा दिखाते स्वामी लिखते है,

मेरे स्वामी रहें है सर्वत्र, साक्षीरूप सर्वदाजी ।
एसा जानकर दील में डरते रहे, कोई मुझसे दुःखी न हो जी ॥

इस तरह माहात्म्य ज्ञानयुक्त भक्ति करने की कुशलता प्राप्त करना उसका ही नाम भक्तियोग।

पूर्वोक्त सभी अंग हो किन्तु धर्म न हो तो वह भक्ति असिद्ध हो जाती है। पति विहीन विधवा भक्ति कोइ फल प्रदान नहीं करती है। अर्थात् आडंबर मात्र रह जाती है। शिक्षापत्री में महाराज ने लिखा है, 'धर्मेण रहिता कृष्णभक्तिः कार्या न सर्वथा।' (३९)

अर्थात् श्री कृष्ण भगवान की भक्ति धर्म रहित किसी भी प्रकार न करें। और श्रीहरि १०२ अंक के श्लोक में कहतें है, 'धर्मेण

सहिता कृष्णभक्तिः कार्येति तद्रहः।'

श्रीकृष्ण भगवान की भक्ति वह धर्मसहित ही करनी चाहिए इस तरह वह सभी सत्शास्त्र का रहस्य है।

धर्म सहित ही भगवद् भक्ति करना वह पंचम भक्तियोग है।

धर्म को भी देश कालादि चलित कर जाते है। उससे ज्ञान (आत्मज्ञान) वैराग्यरूप उसके अंगरक्षको को द्रढ करना अनिवार्य है। ज्ञान वैराग्य से रक्षित धर्म और धर्म से रक्षित भक्ति श्रेयस्कारी बनती है। धर्म सहित भक्ति परस्पर अनुस्युत होती है तब भागवतधर्म कहलाता है। भागवतधर्म वह एक विशिष्ट भक्तियोग है। दोनों परस्पर आनुसंगीक है फिर भी भक्ति धर्माश्रित है। गढडा मध्य के ३५ वचनामृत में महाराज कहते है,

भगवान की मूर्ति की उपासना, भगवान के चरित्र और भगवन्नाम स्मरण बिना केवल धर्म करके कल्याण प्राप्त करना वह तो तुंबी बांधकर समंदर तैरने जितना कठिन है। भगवान की मूर्ति का आश्रय हो और भगवान के चरित्र कथन एवम् श्रवण करता हो और भगवन्नाम स्मरण करता हो, यदी उसमें धर्म न हो तो वह सिर पर पाषाण लेकर समंदर तैरने की इच्छा रखे एसा जानना चाहिए।

श्री हरि के उपर्युक्त वचन मुमुक्षुओं को बहुत ही सोचने योग्य है।

प्रकटभावयुक्त भक्ति, अनन्यभावयुक्त भक्ति, निष्कामभावयुक्त भक्ति, माहत्म्यज्ञान युक्त भक्ति, धर्म सहित ज्ञान-वैराग्य युक्त भक्ति इस तरह का भक्तियोग भगवान श्री हरि को अभीष्ट है। ऐसा भक्तियोग भवजल पार करने की उत्तम नाव है।

श्री हरि को प्रिय श्रीमद् भागवत के तृतीय स्कंध में कपिल भगवान ने तामस्, राजस्, सात्विक एवम् निर्गुण भक्तियोग का वर्णन किया है। कैसे-कैसे भाव-गुणों को वश होकर हम भक्ति करते है उसका यह उत्तम दर्पण हमें भक्ति शुद्धि में बहुत ही उपयोगी होगा।

(१) जिसकी बुद्धि में क्रोधभाव, परपीडाभाव, दम्भ-आडंबर तथा मत्सर है तथा भक्ति करता है तो वह तामस् है। ऐसी भक्ति का फल अज्ञानमय तमोगुण प्रधान होता है।

(२) जो विषयों की इच्छा, यश-कीर्ती, प्रतिष्ठा तथा ऐश्वर्य की कामना से भगवद् प्रतिमाओ में भेद बुद्धि से भगवद् भक्ति करता है वह राजस् है। उसे रजोगुण का फल मिलता है अर्थात् रजोगुण रागमय होने से वैभवो को प्राप्त कर बहुत आसक्त होता है।

(३) जो पापों के विनाश के लिए, परमात्मा को यत्कींचित निवेदन करता है फिर भी यह मुझे करना चाहिए एसी कर्तव्य बुद्धि से अर्चनादि भक्ति करता है वह सात्विक है, जिसका फल सत्वमय है, अर्थात् कलेश रहित सुख को प्राप्त करता है।

(४) जो भक्त केवल भगवान के गुण, यश, चरित्र श्रवण कर अंतर्यामी परमात्मा की विशुद्धभावना से निर्हेतुक तैलधारावत् अविच्छिन्न भक्ति करता है वह निर्गुण भक्तियोग है, जिसका फल निर्गुण अर्थात् सर्व बंधनों से मुक्त होकर भगवान के अगाध-अखंड सुख में प्रवेश होता है।

लक्षणं भक्तियोगस्य निर्गुणस्य ह्युदाहृतम्।
अहैतुक्यव्यवहिता या भक्तिः पुरुषोत्तमे ॥
(३-२९-१२)

यह सर्व भक्तियोग का सार श्रीहरि ने शिक्षापत्री में हमें दिया है-

निजात्मानं ब्रह्मरूपं देहत्रयं विलक्षम् ।
विभाव्य तेन कर्तव्या भक्तिः कृष्णस्य सर्वदा ॥

अपने आत्मा में ब्रह्मस्वरूप की विभावना कर सदा काल परमात्मा की भक्ति करना। ब्रह्मरूप अर्थात्, किसी भी प्रकार के लैकिक भावों से रहित होकर शुद्ध स्वरूप होकर भक्ति करना। ऐसा निर्गुण भक्तियोग अविनाशी, शाश्वत, अपरिमित भगवद् सुख को देनेवाला है। ब्रह्मरूप होकर भक्ति करना वह बहुत दुष्कर है फिर भी उसका दूसरा कोई उपाय न होने से धीरे धीरे प्रयास करने से, विशुद्ध-निर्मल संतो-भक्तो के संग से ऐसा भक्तियोग उदय होता है।

इस बात को सरलता से समझाते सद्. गोपालानंद स्वामीने कहा, जिसे भगवान की भक्ति करनी हो उसे मन में किसी भी बात की विवेचना (आलोच) नहीं रखनी चाहिए।

ऐसी भक्ति तीनों लोक में दुर्लभ है।

श्री हरि ने शिक्षापत्री में कहा है, ... ऐसी भक्ति और सत्संग के अलावा और कोई कल्याणकारी साधन मुझे दिखता नहीं है। इस बात को निष्कुलानंदजी कहते है, -

भक्ति समान नहीं साधनजी,
बारंबार सोचता हुं मनमें जी ।
जिसके लिए जन करते है यत्नजी,
उसमें सुख कम-दुःख रहा है सघनजी ॥

भक्ति के बिना यह संसार की सीमा नही आती है। अतः अन्य साधनोका अवलम्बन न करके विशुद्ध भक्तिसे प्रभुप्राप्तिमें जीवन व्यतित करना चाहिए।

'स्वामिनारायण महामन्त्र महिमा'

सा. सर्वमंगलदास

प्रिय भक्तजनो, जब उद्धवतार सद्. श्री रामानंद स्वामी ने इस संप्रदाय की स्थापना की और महाप्रभु श्री सहजानंद स्वामी को जेतपुर में धर्मधुरा सोंपकर संवत् १८८६ में अक्षरनिवासी हुऐ। उसके बाद फरेणी में भगवान श्रीहरि श्री रामानंद स्वामी के चौदहवे दिन संवत् १८५८ मागशर वदि तिथि कृष्णपक्ष दिनांक ३१-१२-१८०२ के रोज सभा में स्वामिनारायण महामंत्र का उद्घोष किया। उसी दिनसे आज तक संप्रदाय में सभी आबाल-वृध्ध, नरनारी अनुयायी इस स्वामिनारायण महामंत्र का भजन स्मरण करते है।

श्री स्वामिनारायण महामंत्र का जाप जो जो संतो-भक्तो करते थे तब श्रीहरि प्रसन्न होकर उसको दर्शन देते थे । यह स्वामिनारायण महामंत्र के प्रताप से भक्तजनो के बडे से बडा महासंकट, महारोग और सर्प के कातिल विष से भी मुक्ति प्राप्त करते है। इस मंत्रके प्रताप से हजारो लाखो जीवात्मा अक्षरधाम को प्राप्त करते है। इस प्रकार स्वामिनारायण मंत्र की अपार महिमा है।

जैसे मनुष्य के लिए दूध पौष्टिक आहार है, वैसे ही मुमुक्षु के लिए स्वामिनारायण महामंत्र आत्यंतिक कल्याणकारी सभी प्रकार का पोषण करता है।

श्रीहरि अपने स्वमुख से लोया के दशवें वचनामृत में कहते है की जब मन में बुरा घाट-संकल्प होने लगे तब ध्यान को छोडकर जीह्वा से, उच्च स्वरसे, निर्लज्ज होकर ताली बजा के स्वामिनारायण.. स्वामिनारायण भजन करें तो सब घाट की निवृत्ति हो जाती है।

इस लिए खाते, पीते, सोते-जागते, उठते-बैठते प्रत्येक क्रिया में इस मंत्र का जप करना चाहिए। इस नाम को कभी नहि छोडना चाहिए। क्योंकि वही भगवत् प्राप्ति का सुगम उपाय है। संत तुलसीदासजी भी कहते है।

कलियुग मे केवल नाम आधारा ॥
सुमिरन सुमिरन नर उतर हो भवपारा ॥

(१) सत्युग में ध्यान करने से भगवान मिलते थे।

(२) त्रेतायुग में दान करने से भगवान मिलते थे।

(३) द्वापर में सेवा करने से और

(४) कलियुग में नाम स्मरण करने से भगवान मिलते है। कलियुग में स्मरण भकित कल्याण का सुगम साधन है। हरि का नाम ही भवरोग मिटाने का उत्तम औषध है। जिसको भी भवरोग से मुक्ति प्राप्त करनी हो उसे भगवत् नाम का जाप करना चाहिए।

श्रीजी महाराज गढपुर प्रथम के ५६ में वचनामृत में कहते है कि, चाहे कितना भी पापी क्यों न हो फिरभी वह अन्तकाल में स्वामिनारायण नाम का स्मरण करेगा तो वह सभी पापो सें मुक्त होकर ब्रह्ममोल में निवास करेगा। सद्. आधारानंदस्वामी भी ईस मंत्र का महिमा गाते हुए कहते है कि,

स्वामिनारायण नाम में जोउ, अनंत रस देखाए सोउ।
एक नामको करत उच्चारा, अवतार कोउ न रहे बारा ॥

महामंत्र के प्रताप से तो स्वरुपानंद स्वामी ने जमपुरी खाली करवाई थी।

एक बार जब महाराज कालवाणी गाँव में बिराजमान थे। तब अगत्राई गाँव के हरिभक्त भीमभाई ने महाराज को कहा, हे महाराज ! इस लोक में ऐसी प्रथा है कि,जब कोई राजा गद्दी पर बैठता है तब कारागार के सारे केदी को मुक्त कर के कारागार को दूध से धोते है। तो महाराज फिलहाल आप भी गद्दी पर बिराजमान हुए है। और आप तो अनंतकोटी ब्रह्मांडो के स्वामी है, राजाधिराज है। तो यमपुरी में बिचारे जो अनंतजीवो है उस पर कृपा कीजिए। उस पर दया किजिए, हे करुणा के सागर।

भक्त की प्रार्थना सुनकर श्रीहरि ने स्वरुपानंद स्वामी को आज्ञा की, स्वामी आप जमपुरी में जाइए । वहां हमारा स्वामिनारायण महामंत्र के जप से, नरक के कुंड में पीड़ीत दु:खी जीवात्मा को वहाँ से भूमापुरुष के लोक में ले जाइए।

तब स्वरुपानंद स्वामी यमपुरी में जाकर स्वामिनारायण.. स्वामिनारायण महामंत्र का उच्चारण किया, उसे सुनकर सारे यमदूत भाग गये। उसके बाद नरक के दु:खी से दु:खी जीवो को स्वामी ने कहा आप सब स्वामिनारायण मंत्र की धुन किजिए। सब

लोग धुन करने लगे, और इस मंत्र के प्रताप से सब जीवो के संचित कर्मो का नाश हो गया और उन जीवों को स्वामी ने जमपुरी से छुडवाकर भूमापुरुष के लोक में भेज दिया।

जैसे हाथी के पैर में सभी प्राणीयो के पैर आ जाते है वैसे ही इस स्वामिनारायण महामंत्र मे तमाम मंत्र आ जाते है। इसलिए इस मंत्र को महामंत्र कहते है।

इसलिए त्रिविध ताप से और जन्म-मरण के दु:खों से मुक्ति पाने के लिए और प्रभु को प्रसन्न करने के लिए हमें सर्वोपरि महामंत्र का जाप करना चाहिए।

महामंत्र के प्रताप से समाधि में धाम देखा ।

सत्संग को सुद्रढ करने के लिए श्रीजी महाराज मांगरोल में अपना परमैश्वर्य प्रताप दिखाने लगे । कोई भी व्यक्ति श्रीजी महाराज को देखता तो उसे समाधि हो जाती । ऐसा अपूर्व कौतुक देखकर उसी गाँव का नवाब वजरुद्दीन भी अपने काजी नाम के दीवान को, महाराज किस तरह से समाधि करवाते है वो देखने के लिए और परिक्षा करने के लिए भेजा । उसने आकर महाराज को कहा, मुझे मेरे ईष्टदेव का दर्शन करवाइए। तब महाराज ने कहा की आप नवाब के साला एवं दीवान होनें से कुछ अयोग्य हो जाये तो राजा की फरियाद आयेगी। तब काजीने कहा की, मुझे नवाब ने ही भेजा है इसलिए फरियाद का कोइ भय नही है।

तब महाराज ने कहा तो फिर स्वामिनारायण महामंत्र का भजन शरु कीजिए । तब काजी ने मंत्र रटना शुरु किया और समाधि हुई । समाधि में महाराज ने काजी को जमपुरी दिखाई । जमपुरी के दुख को देखकर काजी डरने लगा । और जमपुरी के दु:ख को सह नही पाया । और बोला की यह तो अनवधि असह्य दु:ख है । तब महाराज ने कहा, यह तो रखिया (राख-भभूत) का डाम है, राख का तो अभी बाकी है । तब भयभीत काजीने फिर से कहा वे दु:ख किस तरह से दुर होगा । तब महाराज ने कहा स्वामिनारायण स्वामिनारायण ऐसा भजन करेंगे तो सारे दु:ख मिट जाएंगे। तब काजीने कहा दु:ख दूर होने के बाद कैसा सुखा मिलता है । तब महाराज ने समाधि करवाके काजीको अक्षरधाम का जो नित्य सुख है व दिखाया। उसके बाद समाधि में से वापस लाकर अपने स्वरुप का निश्चय करा के अपना आश्रित किया। उसके बाद दिवान ने नवाब के पास जाकर जो कुछ भी अजीब सी घटना घटी थी वे सब सुनाई। वे सुनकर तुरंत नवाब श्रीजी महाराज के पास आया। उस समय महाराज दुसरे गांव जाने की तैयारी करते थे। तब नवाब ने बहुत बिनती करके चार माह तक महाराज को अपने राज्य में रखा, और महाराज की सेवा परिचर्या भी की और महाराज का अनन्य आश्रित होकर श्री स्वामिनारायण महामंत्र का भजन भी करने लगा।

स्वा..मि..ना..रा..य..ण.. इस षडक्षरी महामंत्र का कैसा प्रौढ प्रताप है इस को बताते हुए प.पू.ध.धू. आचार्य श्री विहारीलालजी महाराज बताते है।

जे स्वामिनारायण नाम लेशे, तेना बधा पातक बाळी देशे ।
छे नाम मारा श्रुतिमां अनेक, सर्वोपरी आज गणाय एक ॥
जो स्वामिनारायण एकबार, रटे बीजा नाम रटया हजार ।
जप्या थकी जे फल थाय एनु, करी शके वर्णन कोण तेनुं ॥

इस पर हम एक प्रसंग देखते है । गाँव बोटाद के अजा महाराज नाम से एक श्रीमाळी ब्राह्मण थे। वह कारियाणी में श्रीजी महाराज के दर्शन करने के लिए गये थे। तब श्रीजी महाराज ने शम्भु शुक्ल को कहा इस यज्ञ से अजा महाराज की नियुक्ति करो।

तब अजा महाराज ने कहा कि- 'महाराज में कुछ पढा-लिखा नही हूं।'

तब श्रीजी महाराज ने कहा, आपने तो महामंत्र पढा है ना ?

तब श्रीजी महाराज ने कहा इस से बडा कोई महामंत्र नही है। इसलिए जाओं और जाप करने के लिए बैठ जाओ। इसके बाद अजा महाराज की यज्ञ के लिए वरणी करके इस को जाप करने के लिए यज्ञ में बिठाया।

सद्. ब्रह्मानंद स्वामी कहते है,

स्वामिनारायण स्वामिनारायण, समरे दु:ख जावे ।
मिटत शंक काल, व्याल, अतुलित सुख पावे ॥

तो व्हाला भक्तजनो कालरुपी सर्प का नाश करने का और महासुख पाने का इससे बडा उपाय क्या हो सकता है ?

और इस वक्त श्रीजी महाराज ने हम सब पर कृपा करके बहुत बडा ओफर दिया है। जैसे कोइ कंपनी में सेल लगता है तब ओफर मिलती है। एक के साथ एक फ्री। मगर इस महामंत्र का एक बार उच्चारण करने से जो लाभ मिलता है उसका वर्णन तो हम कैसे कर सकते है। खुद ही अनुभव करके देखो। कितनी बडी ओफर है, अब इसका लाभ नहि लिया और हमारे हाथ में से वो स्कीम चली गई तो फिर न जाने एसी ओफर मिले या ना भी मिले। और एसी ओफर देनेवाले भी ना मिले। तो आईए इस ओफर का लाभ उठाईए और श्री स्वामिनारायण महामंत्र का गान करके नित्य शाश्वत, दिव्य अक्षरधाम का महा सुख पाईए।

रस दर्शन

''रसो वै सः''

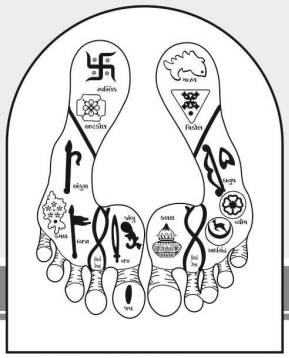

पा. श्रीलालजी भगत

जिन जान्यो रस जांबुको, सर्वे रसमहीं सार; ।
अन्य रसकी इच्छा टरी, निरस भयो संसार ॥

– निष्कुळानंद स्वामी

भगवान स्वामिनारायण के दक्षिण चरण में जांबु फल का चिन्ह है। इस संसार के तमाम रस भगवान श्रीहरि की मूर्ति में समाविष्ट है। जैसे जांबु फल का रस सब फलों के रस से अधिक मधुर है, उत्तम है; उसी तरह भगवान की मूर्ति परम सुखमय है। एसा अनुभवज्ञान जिसे हो जाता है, फिर उसे जगत के पंचविषयों के रस की इच्छा टल जाती है।

भगवान स्वामिनारायण की मूर्ति, उनके ध्यान-भजन में सर्व सुखमात्र विद्यमान है – ऐसी प्रतिती जिनको हो गई उन्हे संसार संबंधी सुख में कोइ रुचि नहीं रहती है। ब्रह्मानंद स्वामी बडे सम्राट कवि थे। उन्होंने संसार के सारे सुख बहुत करीब से अनुभव किये। जगत की मान-मोटाई, जयजयकार और तरह तरह के आदर-सत्कार का अनुभव किया था। किन्तु वो अंदर से बहुत खालीपन महेसुस करते थे । मगर जब उन्हे स्वामिनारायण भगवान का दर्शन हुआ तब उनको भीतर से आनंद का अनुभव हुआ।

जब भगवान की मूर्ति हमे रसमय लगती है, हमारी चेतना उनकी मूर्ति-लीला में व्याप्त हो जाती हैं, तब संसार निरस हो जाता है और परमात्मा के स्वरुप में निष्काम प्रेम का उदय होता है।

भगवान स्वामिनारायण की मूर्ति जांबु फल के रस समान है। यह मूर्ति में हमारा दिल लग जाये, हमारी आत्मा मूर्ति में स्थिर होने लगे तब जगत के तथा कथित पंचविषय के सुख की निवृत्ति हो जाती है।

'अन्य रस की इच्छा टरी, निरस भयो संसार' इस तरह जब हमारी इन्द्रियां और अंतःकरण तीव्र वेग से स्वामिनारायण भगवान की मूर्ति में जुडने लगे तो मन जगत के पंचयविषय संबंधी सुख से धीरे धीरे दूर होने लगता है। मगर जीव को भगवान में स्थिर करने की बाबत सबसे आवश्यक है।

जब हमारी वृत्तियां जगत की ओर चलने लगे तब हमारी बुद्धि में प्रबोधन करना चाहिये कि यह संसार में चोर्यासी लाख योनियां है, उन सब में यह जीव जगत के सुखों को भूगतता हुआ इस मनुष्य देह में आया है। यद्यपि उसे कभी उसकी तृप्ति नही हुई। इसलिए जगत के सुख नाशवंत और अधूरे हें और भगवान स्वामिनारायण की मूर्ति का सुख शाश्वत और पूर्ण है।

तो, जांबु फल का ध्यान हमे शिक्षा देता है कि सब प्रकार के सुख भगवान स्वामिनारायण की मूर्ति में समाविष्ट है, ऐसे भगवान को छोडके जगत के पदार्थो में सुख की खोज करना व्यर्थ है। **'रसो वै सः'** सब आनंदमय रस का स्रोत स्वामिनारायण भगवान की मूर्ति है, उसका ध्यान-भजन-चिंतवन करने से जीव आनंद के सागर में झेलता है।

जय स्वामिनारायण....।

सत्येन रक्ष्यते धर्मो विद्याऽभ्यासेन रक्ष्यते ।
मृज्यया रक्ष्यते रूपं कुलं वृत्तेन रक्ष्यते ॥

धर्म का रक्षण सत्य से, विद्या का अभ्यास से,
रूप का सफाई से, और कुल का रक्षण
आचरण करने से होता है ।

तब ही भगवान रक्षा करतें है ।

साधु अमृतवल्लभदास

एक ही कतार में पक्षीओं को भिन्न-भिन्न आकृतिओं का सर्जन कर उडते देखना यह एक आल्हाददायक दृश्य है । आज तक कभी दो पक्षी आपस में टकरा गए एसा कभी नहीं सुना है। टकराना और बिना प्रयोजन टक्कर झेलना यह तो मनुष्य का मौलिक लक्षण है । ऐसी टकराहट को गर्भ रहता है और योग्य समय पर युद्ध का जन्म होता है। अत: जीवन है तो संग्राम भी होता रहता है। निश्चितरूप से

'सर्वे यत्र विनेतार; सर्वे यत्राभिमानिन: ।
सर्वे महत्वमिच्छन्ति कुलं तदवसीदति ॥'

अर्थात् जहां सभी नेता हो, अभिमानी हो और महत्वाकांक्षी हो उस कुल या समूह का विनाश होता है। अत: जीवन में जीवन के प्रति प्रतिबद्धता होनी आवश्यक है। जीवन के प्रति प्रतिबद्धताविहिन कलाकार कितना भी बडा हो किन्तु टीक नहीं शकता । वह सिर्फ प्राणहीन वस्तु जीतना ही मूल्य प्राप्त करता है। अत: जीवन के साथ जुडा शब्द पीढी दर पीढी अमर रहता है। अर्थात् भगवान या सच्चे संत की छत्रछाया में (आज्ञा में) बिताया हुआ जीवन अमरत्व को प्राप्त कराता है।

उपर की बात सामान्य हुई किन्तु भगवान के भक्त के लिए यह बात असामान्य कैसे हो सकती है ? अर्थात् भक्त के जीवन की प्रतिबद्धता क्या हो ? भक्त का मूल्य किसके आधार है ? आदि सवालों का केवल एक ही उत्तर = आज्ञा (वचन) । भक्त के लिए भगवान या महापुरुष के वचन ही सर्वस्व है। उनको प्रसन्न करने का यही सर्वोत्तम साधन है।

'जेम मोर पन्नी बिंदु आवता, रत्ये लिए रस भरेलडा ।
तेनो मयुर थाय तद्वत्, थाय पडता बिंदु ना ढेलडा ।
तेम आवता वचन वालातणा, ग्रही लिए नर गरजु थई ।
ते पूरण पामे प्राप्ति, फरी फेरवणी रहे नहीं ॥'

अर्थात् जिस तरह मयुर पक्षी बिंदु आते वह ग्रहण करने से उस बिंदु से तदाकार मोर जन्म लेते है उसी तरह भगवान के वचन यदि मनुष्य ग्रहण कर ले तो उसे पूर्ण प्राप्ति होती है, और दोबारा जन्म नहीं लेना पडता है अर्थात् मोक्ष की प्राप्ति होती है।

आत्यन्तिक कल्याण के दो पंख (१) आज्ञा और (२) उपासना। इस तरह देखा जाये तो आज्ञा और उपासना एक-दूसरे के पूरक है। दूसरा, रक्षाबंधन (राखी) के पर्व से हम सभी परिचित है। इस संदर्भ में भगवान की आज्ञा रूप रक्षा के बन्धन में भक्त रहे तो भगवान रक्षा करे यह बात निश्चित है। 'भक्त परमेश्वर के वचन का अनुसरण न करते हुए जब इधर-उधर विचलित होता है तब वह कलेश को प्राप्त करता है। वचन का पालन करता है तो जिस तरह भगवान का आनंद है वैसे आनंद को प्राप्त करता है। अत: त्यागी को जो आज्ञा की है उस तरह त्यागी को रहना चाहिए तथा गृहस्थ को जो आज्ञा की है उस प्रकार गृहस्थ को रहना चाहिए। भगवान के भक्त हो उसे जितना दु:ख होता है वह तुच्छ पदार्थो के हेतु भगवान की आज्ञा का पालन न करते हुए होता है एवम् जितना सुख प्राप्त होता है वह भगवान की आज्ञा के पालन से प्राप्त होता है।' (व.प्र.३४) तो यहां पर हम गुणातीतज्ञान के माध्यम से 'आज्ञा' विषय को समझने का प्रयास करेगें।

अनंत प्रकार के सुख है । उसके मध्य चार सुख है वह शाश्वत है। उस में प्रथम आत्म स्वरूप (ब्रह्मस्वरूप) वर्तन करना। द्वितीय भगवान की मूर्ति का चिंतवन (उपासना) करना । तृतीय भगवान की आज्ञा में रहना एवम् चतुर्थ एकांतिक का निरंतर समागम करना । तथा आज्ञा, उपासना और संत का संग यह तीनों से जीव बलवान होता है और आत्यनित्क कल्याण हेतु आज्ञा और उपासना यह दो बात ही मुख्य है । बाकी आत्मनिष्ठा किसीको हो या न हो, वैराग्य हो या न हो फिर भी यह दो बात अवश्य चाहिए और उपासना में तो हमे पृथ्वी का निशाना है, उसमें कोई शक नहीं है, क्योकी जो मिले है उनका ध्यान भजन करना। किन्तु आज्ञा पालने में यदि त्रुटि रहेगी तो अवश्य मूंह काला होगा। समझने की बात तो यह है कि इस तरह वास्तविक जोरदार स्वरूप निष्ठा हो तो आज्ञा अनुसार सहज वर्तन होता है। **निश्चित तोर पर आज्ञा और उपासना परस्पर पूरक है। जिसको जितनी आज्ञा द्रढ उसकी उतनी उपासना द्रढ और जिसकी जितनी उपासना द्रढ उसकी उतनी आज्ञा द्रढ है।**

एकबार महाराज ने निष्कुलानंद स्वामी से कहा, यहां बैठकर हमारा दर्शन करो। तब स्वामी ने कहा सामने वृद्धा के दर्शन होते है। अत: वहां नहीं आसन ग्रहण करुंगा। फिर महाराज ने कहा, 'हमारा कहा पालन नहीं करते हो अत: जाओ विमुख हो।' तब

स्वामी ने कहा, 'महाराज वृद्धा के दर्शन करने से में विमुख होउ उसके अलावा तो अच्छा अभी ही आपका विमुख किया होउ वह ठीक है।' इस तरह कहकर चरण स्पर्श करके चले गए। अत: इस तरह आज्ञा पालन में भी विवेक रखना चाहिए। तो भगवान रक्षा करते है। भगवान के भक्त को आज्ञा का पालन, स्मृति रहे और सत्संग में लगाव आए ऐसी रुचि रखनी चाहिए। जब बुखार आए तब देह में जलन हो किन्तु आज्ञा का पालन न करने से देह और आत्मा दोनों में जलन होती है। स्वामी कहते है कि दूसरे को उपदेश देते है किन्तु अखंड भजन नहीं होता है। वह भी करे तो हो सकता है। बैल को नाथते है और वश करते है, ऐसे हम बलपूर्वक आज्ञा का पालन करते है। इस तरह हम सब आज्ञाकारी है। भक्ति करके देह को तुच्छ एवं गौण करे तो कोन खुश न होय ? उपर्युकत प्रसंग में श्रीहरिजी महाराज निष्कुलानंद स्वामी पर कितने प्रसन्न हुए होगें।

आज्ञा एवम् उपासना यह दोनो जिसमें होंगे उस पर बडों की द्रष्टि होंगी। जीव तो नादार है, जो आज्ञा का उल्लंघन करता है उसके पापों का पार नहीं, अत: मोक्ष के पथ पर चलते सावधान होकर भगवान की भक्ति करें। हमारे मन में खिन्नता आऐ तो मर आने दे किन्तु सत्पुरुष जो आज्ञा करें उसका कदापि उल्लंघन करना नहीं है। क्योंकी भगवान और बडे साधुजन परदे में रहकर देखते है अत: अक्षरधाम को प्राप्त करना हो तो आज्ञा का पालन करना चाहिए। इस लोक में रक्षा करने के लिए महाराज ने शिक्षापत्री, आचार्य, साधु किया है। वह रात-दिन कहते है एवम् सावचेत करते है।

'विषस्य विषयाणां हि द्रश्यते महदन्तरम्।
उपभुक्तं विषं हन्ति षिवषया: स्मरणादपि ॥'

अर्थात्, विष (जहर) और विषय (भोग) ईन दोनों के बीच बडा अंतर दिखाई देता है। जहर तो खाने पर ही मृत्यु देता है लेकिन विषय तो स्मरण करने मात्र से मार देता है। अत: आज्ञा पालन में पीछे न हटे तो भगवान रक्षा करें।

राजकोट के सुराभी राजा एरंडी का तेल एवम् बाजरे की रोटी ही खा सकते है और एक चारण-भाट भेड-बकरीयों का दूध एवम् बाजरे की रोटी ही खा सकते है। वडोदरा के शाहुकार मेरावजी कमोद के अक्षत नहीं खा सकते और रुगनाथराय के घर में रुपये है पर, भाजी और बाजरे की रोटी ही खा सकते है। इस तरह कर्म वश जीव नियम रखता है किन्तु भगवान की आज्ञा पालन का नियम नहीं रखता है। जीव का यही उलटा स्वभाव है। जीव को जो बात अच्छी लगती है उसमें उसे दु:ख द्रश्यमान नहीं होता है यह सिद्धांत की बात है। प्राणी को ठंडी, गरमी, बारिश सब सहना ही होता है। वह कर्म को वश होकर झेलते है और हमें तो आज्ञा है, इतना दु:ख भी नहीं है, ऐसा सोचना चाहिए ।

सत्संग में वर्तमान का लोप हो वह कीसीसें रखा नहीं जाए और पक्ष ले तो अपने शिष्य के पीछे जाना पडे। यह तो जो भूला वह गया। एक दीन लक्ष्मण सुतार से निष्कामी वर्तमान का लोप हुआ। उसे महाराज ने दूसरे गांव में लूंट होगी ऐसा संदेश देने भेजा। वापस लौटते रास्ते में सर्प ने उछलकर उसकी छाती में घाव किया, वह गीर गया। फिर सर्प ने उसको काटने के लिए मुंह खोला तब लक्ष्मण ने कहा, 'जो मुझे काटे तो तुजे स्वामिनारायण की कसम है।' तब सर्प बोला, 'में तो काल हूं मगर मुजे भगवान स्वामिनारायण की कसम का पालन करना पडेगा।' तुमने क्यों आज्ञा का पालन नहीं किया। अत: तुम महाराज के पास जाकर यह बात कहना तथा अब दोबारा आज्ञा का उलंघन करेगा तो में तुझे फिर से काटूंगा। फिर उसने महाराज को यह सारी बात कही। तब महाराज ने कहा, 'जो वर्तमान का पालन नहीं करेगा उसे सर्प दंश देगा। जिसे सत्संग में रहना हो वह रहे किन्तु सत्संग को कलंक मत लगाना। किसी के बिना कुछ रुकेगा नहीं। जो ग्वाला होता है वह प्राणियों को बार बार उसके रहने के स्थान पर पहुंचाता है उस पर काबु रखता है। उसी तरह इन्द्रिय प्राणी की तरह है उसे काबु में रखकर भगवान की आज्ञा अनुसार रखना-चाहिए। भगवान के स्वरूप में जोड दे तो भगवान रक्षा करें। जीव की आकांक्षाए तो शेखचल्ली की जैसी है। उसमें से कुछ निकलनेवाला नहीं है। यह बात भी ध्यान से समझ लेनी चाहिए।'

कृपानंद स्वामी की ऐसी समझ है कि, कितनी भी कठिनाईयां आ जाए मगर महाराज की आज्ञा का पालन करना है। एकबार कृपानंद स्वामी खारा गुंदरण गांव के तालाब की दिशा तरफ गए थे। वहां दूर एक वृद्धा गोबर के उपले इकट्ठे कर रही थी। उसे देखा तो स्वामी वहां से भागे। वह गुणातीतानंद स्वामी स्नान कर रह थे वहां आकर कहा भागो, भागो तब गुणातीतानंद स्वामीने पूछा, 'क्या हुआ ? तब उन्होंने कहा उस किनारे पर एक वृद्धा है। वह ऐसे समर्थ आज्ञा का भय रखते। तो क्या कृपानंदस्वामी को आज्ञा थी और दूसरे को नहीं ? उस तरह रहे तो भगवान रक्षा करें। हम आज्ञा की जितनी रक्षा करेंगे उतनी भगवान हमारी रक्षा करेगें। यह सिद्धांत की बात है। जिस तरह कोइ पतंग उडाता है तो उसकी दोर उसके हाथ में होती है। उस तरह भगवान की आज्ञा में हो उसके पास भगवान की मूर्ति होती है। जब तक वह नियम में है तब तक उस पर महाराज की कृपाद्रष्टि रहती है। जिस तरह बच्चों पर मां-बाप की नजर रहती है और आंख की रक्षा पलकों से होती है उस तरह भक्त पर भगवान की द्रष्टि रहती है, अर्थात भगवान रक्षा करते है अत: नियम (आज्ञा) का पालन करना चाहिए।'

श्रीजी महाराज ने एकबार बात कही जो हमारी आज्ञा का पालन करता है वह हमारे से दूर होने पर भी वह हमारे पास है उसकी वह जहां हो वहां हमें रक्षा करनी पडती है। जो आज्ञा का पालन करता है उसकी ही भगवान रक्षा करते है अत: आज्ञा का पालन अवश्य करना चाहिए।

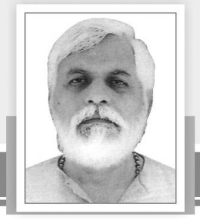

ऐतिहासिक हिंडोला उत्सव २०१८, वडतालधाम

प्रो. हरेन्द्रभाई भट्ट

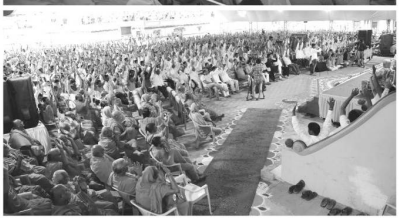

वडतालधाम यानि उत्सव तीर्थ। इस तीर्थभूमि में हाल ही में ५ अगस्त से ९ सितम्बर तक ३६ दिनों का भव्य हिंडोला उत्सव मनाया गया। यह हिंडोला उत्सव समग्र संप्रदाय के लिए एक यादगार स्मृति उत्सव रहा।

प.पू.ध.धू. आचार्यश्री राकेशप्रसादजी महाराजश्री अ.सौ. लक्ष्मी स्वरूपजी, पू. लालजी महाराज ने दर्शन कर अति प्रसन्नता व्यकत की।

स्वामिनारायण संप्रदाय के दोंनो देश के अग्रणी संत दर्शन हेतु पधारे। शास्त्री. पू. हरिप्रकाशजी स्वामी, शास्त्री पू. ज्ञानप्रकाशदासजी स्वामी, पू. निलकंठचरणदासजी स्वामी, शास्त्री पू. भानुस्वामी (डाकोर), शास्त्री पू. बालकृष्णदासजी (मेमनगर), पुराणी पूज्य हरिस्वरुपदासजी स्वामी (मेमनगर), शास्त्री पू. भानुस्वामी (पोरबंदर), शास्त्री पू. आनंदस्वरुपदासजी स्वामी (वडीयाधाम) और पू. जादवजी भगत (भूज), पार्षद पूज्य कानजी भगत (वडताल) समेत अहमदाबाद-गढडा-जूनागढ-धोलेरा देश के संतगण दर्शन हेतु पधारे और महोत्सव का आयोजन देखकर बहुत प्रसन्नता व्यकत की।

गुजरात के अनेक महानुभावो ने भी दर्शन का लाभ लिया। सुरत के धारासभ्य श्री वी.डी. झालावाडिया, पेटलाद के धारासभ्य श्री निरंजनभाई पटेल, विनुभाई मोरिडया, अर्जुनसिंहजी तथा खेडा जिला के कलेकटरश्री, डेप्युटी कलेकटरश्री सिहत अनेक अग्रणीओने दर्शन कर बहुत प्रसन्नता व्यकत की।

स्वामिनारायण संप्रदाय के अनेक अग्रणी हरिभक्त एवम् गुजरात के ५०० से भी अधिक गांव के सभी धर्मो के साडे तीन लाख से भी ज्यादा भक्तजनोने आकर दर्शन कर अपने चित्त को पावन किया।

सात हजार से भी अधिक दर्शनार्थीओने १५ फूल स्केप कापीमें अपने अभिप्राय (अनुभूति) लेखन कर अभिनंदन शुभकामनाओंकी बारिश बरसाई। सभी के उर में एक ही बात थी। यह हिंडोला दर्शन भव्यातिभव्य है। यहां पर साक्षात् भगवान की अनुभूति हुई और चित्त को शांति प्रदान हुई। ऐसा हरसाल होना चाहिए तथा दूसरे अनेक भक्तोने मौखिक अभिप्राय भी दिए।

देश की तरह विदेश के भी अनेक हरिभक्त दर्शन के लिए पधारे थे।

आनंद की बात तो यह है कि चरोतर प्रांत के नौ-दस विद्यालय अपने सभी छात्रो के साथ दर्शन के लिए आए।

समग्र हिंडोला महोत्सव का आयोजन प.पू.ध.धु. आचार्यश्री राकेशप्रसादजी महाराज की प्रेरणा, वडताल टेम्पल बोर्ड के चेरमेन पू. देवप्रकाशजी स्वामी, कोठारी प.पू.श्री घनश्यामप्रकाशदासजी स्वामी, सत्संग महासभा के प्रमुख प.पू. श्री नौतमप्रकाशदासजी स्वामी के मार्गदर्शन में वडताल मंदिर के आसी.कोठारी, प.पू.श्री डो. संतवल्लभदासजी स्वामी और पू. श्यामवल्लभदासजी स्वामी ने किया। पू. श्यामवल्लभस्वामी के इस आयोजन मे ३० से भी अधिक गांवो के ७६५ जितने स्वयंसेवको ने सेवा प्रदान कर सफल बनाया। श्रीहरिकृष्ण महाराज की कृपा से निर्विघ्न यह महोत्सव का कार्य पूर्ण हुआ। सत्संग महासभा के प्रमुख पू. नौतमप्रकाशदासजी स्वामी की प्रेरणा से मुंबइ के अजमेरा शेठ, चंद्रेशभाई पारेख सहित और कई भक्तजनोने दान देकर यह हिंडोला महोत्सव को पूर्ण बनाया।

सत्संग समाचार

संकलन : साधु श्यामवल्लभदास (वडताल)

श्री खानदेश सत्संग समाज एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर जलगांव आयोजित

वडतालधाममें श्रीमद् सत्संगिजीवन कथा (मराठी भाषा में)

भगवान श्री स्वामिनारायण महाप्रभु के समय से ही भारतवर्ष के प्रत्येक कोने में सत्संग का व्याप था। महाराष्ट्र राज्य के जलगांव शहर में आज भी वही सत्संग की दिव्य परंपरा चली आ रही है। जलगांव के सत्संगीजनो निष्ठावान, प्रेमी एवं उत्साही है। प.पू. आचार्य श्री राकेशप्रसादजी महाराजश्री के आशीर्वाद से वरताल के संत प.पू. गोविंदप्रसाददासजी स्वामी के मार्गदर्शन अनुसार प.पू.शा.श्री पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी स्वामी के वक्ता पद पर वडतालधाम में प्रथमवार मराठी भाषा में श्रीमद् सत्संगिजीवन सप्ताह पारायण का सुन्दर आयोजन हुआ था। वरताल जैसे पवित्र तीर्थधाम में सत्संगिजीवन की कथा सुनकर महाराष्ट्र के भक्तजन धन्यभागी हो गये थे। प्रतिदिन प्रातःकाल में सुन्दर प्रभातफेरी का आयोजन होता था, खानदेश के प्रेमी भक्तजन इसमें उत्साहपूर्वक जुडते थे और स्वामिनारायण महामन्त्र की धून्य करते थे। परम प्रसादीभूत गोमती तालाब के रम्य तट पर समूह महापूजा का आयोजन हुआ था। सभी भक्तोने महापूजाका सजोड दिव्य लाभ लीया था। वरताल के युवा एवं विद्वान् संतो प.पू. शा. नयनप्रकाशदासजी स्वामी, प.पू.शा. विनयप्रकाशद्साजी स्वामी, पू. शा. गुणसागरदासजी स्वामी, पू. शा. घनश्यामस्वरुपदासजी स्वामी ने यह प्रसंग को सफल करने में अपना पूरा सहयोग दीया था। प.भ.श्री प्रमोद झांबरे ने श्री स्वामिनारायण ट्रावेल्स से सभी भक्तो की आने-जाने की व्यवस्था की थी। इस प्रसंग में वरताल के चेरमेन प.पू.श्री देवप्रकाशदासजी स्वामी, आ.को.प.पू.शा. संतवल्लभदासजी स्वामी आदि संतोने आशिर्वाद दिये थे। **अहेवाल : शा. गुणसागरदासजी स्वामी**

श्री स्वामिनारायण मंदिर भुसावल - द्वितीय पाटोत्सव

श्री स्वामिनारायण मंदिर भुसावल का द्वितीय पाटोत्सव मागसर सुद छठ्ठ, गुरुवार, दिनांक १३-१२-२०१८ के दिन प.पू. आचार्य महाराजश्री के पावन सानिध्यमें सम्पन्न हुआ था। पाटोत्सव अंतर्गत श्रीमद् भागवत सप्ताह कथा का आयोजन किया गया था। उस के आयोजक प.पू.स.गु.शा.स्वामी धर्मस्वरूपदासजी थे। और वकता प.पू.शा.स्वामी योगेन्द्रप्रसाददासजी थे। कथा के अंतिम दिन प.पू.ध.धू. आचार्य श्री १००८ राकेशप्रसादजी महाराजश्री के कर कमलों द्वारा भगवान संकल्प सिध्ध श्री हरिकृष्ण महाराज का अभिषेक हुआ और सभा में आकर प.पू. महाराज श्री ने सभी को आशीर्वचन देकर कृतार्थ किये और उसमें महाराजश्री ने भुसावल महाराष्ट्र (खानदेश) के हरिभक्तो को बहुत प्रेमी और प्रिय बताया और सभी हरिभक्तो को आशीर्वाद दीया। संपूर्ण पाटोत्सव एवं कथा के यजमानश्री प.भ.श्री.डो. जग्गनाथ केबजी भिरुड एवं परिवार को भी अपने आशीर्वचन से कृतार्थ किये और उत्सव के प्रति अपनी खुशी व्यक्त की था। अंतमें सभी भक्तोने महाप्रसादका लाभ लिया और धन्य हुए। **अहेवाल : ऋषिस्वरूपदासजी स्वामी, वासद**

श्री स्वामिनारायण परमधाम यावल मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव

श्री स्वामिनारायण परमधाम यावल में अ.नि.स.गु.शास्त्री कृष्णस्वरूपदासजी के शिष्य को.स्वामी वासुदेवचरणदासजी व शिष्यमंडल और समस्त ट्रस्टी मंडल, खानदेश, गुजरात, नाशिक, पूणे, मुंबई के हरिभक्तो कि सहायता से नूतन भव्य दिव्य मंदिर (वडताल संस्थान) का बनवाया। यह मंदिर में स.गु.स्वामी गोविंदप्रसाददासजी की प्रेरणा से मेतपुर के हरिभक्तो की और से अनमोल सेवा प्राप्त हुई है। और समग्र प्रतिष्ठा महोत्सव मे सत्संग महासभा के प्रमुख स.गु.शा. नौतमप्रकाशदासजी ने संतो और हरिभक्तो के भोजन के लिए सीधा सामग्री प्रदान की और मंदिर के मुख्य तीन सागवानी कलात्मक दरवाजा की सेवा की।

उस मंदिर मे दिनांक १४-१२-२०१८ को वडताल पीठाधिपति प.पू.ध.धू.१००८ आचार्यश्री राकेशप्रसाद महाराजश्री के कर कमलों से मंदिर में श्री लक्ष्मीनारायण देव, श्री घनश्याम महाराज, श्री राधाकृष्ण देव, श्री गणपति, श्री हनुमान आदिक देवो की प्राण प्रतिष्ठा की गई। साथ में दिनांक १२-१२-२०१८ से १८-१२-२०१८ तक श्रीमद् भागवत कथा, श्री महाविष्णु पंचकुण्डी यज्ञ, संहिता पाठ वगैरे का आयोजन हुआ। भागवत् कथा के वक्ता स.गु.शा.श्री भक्तिप्रकाशदासजी और महोत्सव के अध्यक्ष के.के. शास्त्री और स.गु.शास्त्री धर्मप्रसाददासजी का पूर्ण मंडल उपिस्थत रहे थे। सात दिन तक धामधामके अनेक संतगण पधारकर दर्शन और आशीर्वचन दिये और खानदेश-गुजरात के हजारो हरिभक्तोने कथा श्रवण का लाभ लिया।

जलगांव जिल्ले में यावल तहसील में यह मंदिर अद्वितीय है, यह व्यास पूण्यनगरी में संप्रदायके स.गु. मंजुकेशानंद स्वामी ने पधारकर अपने शिष्यमंडल के साथ रासक्रीडा की थी। सत्संग के बीज बोये थे। आज उन्ही के आशीर्वादसे खानदेश का सत्संग समाज नव पल्लवीत हुआ, सत्संग का विकास हुआ, गाँवोगाँव में मंदिर हुए, उसी से श्री स्वामिनारायण संप्रदाय के भक्तगण-संतगण प्रभावीत हुए।

अहेवाल : स्वामी वासुदेवचरणदासजी

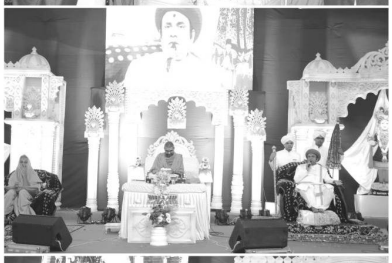

श्री स्वामिनारायण मन्दिर ईन्दौर-प्रथम पाटोत्सव

मध्यप्रदेश के ईन्दौर शहर में भगवान श्री स्वामिनारायण महाप्रभु के अनेक सत्संगि आश्रित रहते है। पिछले साल ही यहां नूतन शिखरबद्ध मन्दिर का निर्माण हुआ था। एक साल व्यतित होने पर यह मन्दिर में भव्यता से पट्टाभिषेक एवं श्रीमद् सत्संगिजीवन पंचाह पारायण का आयोजन किया गया था। प.भ. श्री दामजीभाई के निवासस्थान से पोथीयात्रा का प्रारंभ हुआ था। जो सभामंडप में प्रस्थापित करके दिप प्रागटय के बाद भगवद् कथा का शुभारंभ हुआ। सत्संगिजीवन ग्रंथ के वक्ता प.पू.सद्.श्री नीलकण्ठचरणदासजी स्वामी एवं उन्ही के शिष्य प.पू.श्री विवेकसागरदासजी स्वामी ने अपनी मधुर एवं रसाल शैली से कथामृत का रस पान करवाया था। यह पावन अवसर पर धाम धाम के ब्रह्मनिष्ठ संतो का दर्शन-आशीर्वचन, धर्मकुल दर्शन-आशीर्वचन, पंचामृत अभिषेक दर्शन, छप्पनभोग अन्नकूट दर्शन, समूह महापूजा, श्री घनश्याम जन्मोत्सव, श्री हरियाग, महिलामंच एवं शोभायात्रा इत्यादि दिव्य आयोजनो से यह पट्टाभिषेक महोत्सव शोभायमान हुआ था। समग्र महोत्सव के मुख्य यजमान की सेवा प.भ.श्री गोपालभाई करशनभाई वासाणी परिवारने स्वीकृत की थी। यहां के सभी नामी अनामी सेवाभावी भक्तो ने विविध सेवा स्वीकार करके अपना जीवन धन्य बनाया था। पंच दिनात्मक यह महोत्सव से जीवन में सत्संग एवं भक्ति का पोषण प्राप्त करके सभी भक्तजनो धन्य हुए थे।

अहेवाल : स्नेहसागरदासजी स्वामी, ईन्दौर)

श्री स्वामिनारयण मन्दिर वरतालधाम में आयोजित भव्य कार्तिकी समैया (महोत्सव) के दिव्य दर्शन

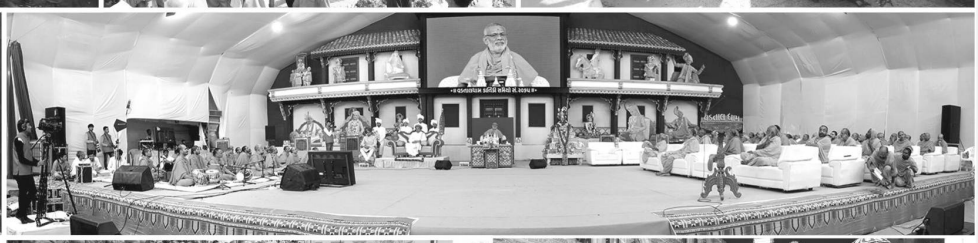

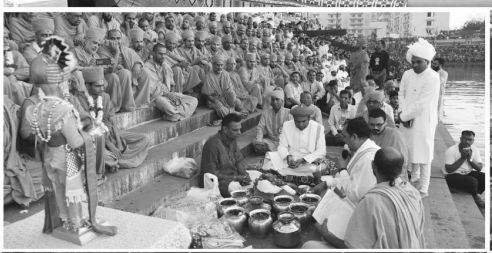

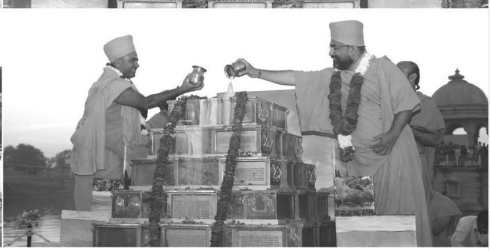

श्री स्वामिनारयण मन्दिर वरतालधाम में आयोजित भव्य कार्तिकी समैया (महोत्सव) के दिव्य दर्शन

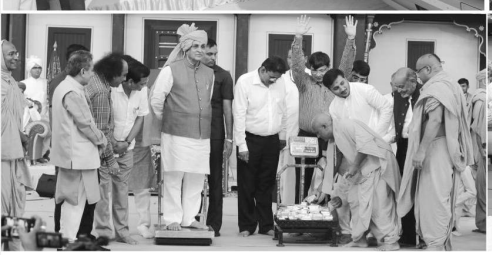

श्री स्वामिनारयण मन्दिर वरतालधाम में आयोजित भव्य कार्तिकी समैया (महोत्सव) के दिव्य दर्शन

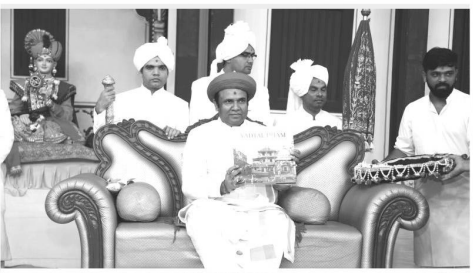

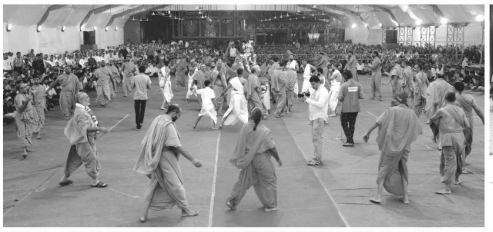

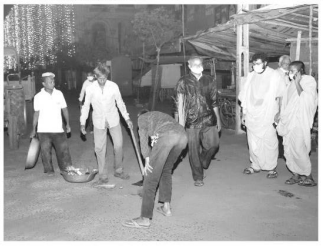

श्री स्वामिनारायण मन्दिर के प्रांगणमें सम्पन्न दीपोत्सव के नयन रम्य दर्शन एवं वरताल मन्दिर के सभामण्डपमें नूतन वर्ष की आशीर्वाद सभामें आशीर्वाद दे रहे प.पू. आचार्य महाराजश्री एवं पू. संतो

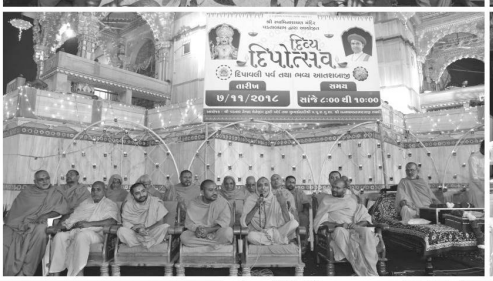

01

02

03

04

05

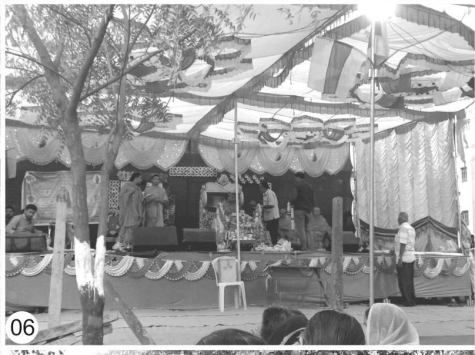
06

07

08

09

10

11

12

13

14

15

(१) धनुर्मास प्रात:कथा (२ थी ५) मकर संक्रान्ति के पावन पर्व पर गौ पूजन - वरताल धाम, गौशाला

(०६ थी ९) श्रीमद् भागवत पारायण - जलगांव, महाराष्ट्र (१० थी ११) श्रीमद् भागवत सप्ताह पारायण - मालोद, महाराष्ट्र (१२ थी १५) नि:शुल्क चश्मा वितरण केम्प, श्री लक्ष्मीनारायण हाईस्कूल वरतालधाम

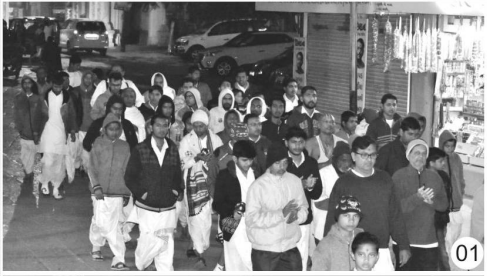
01

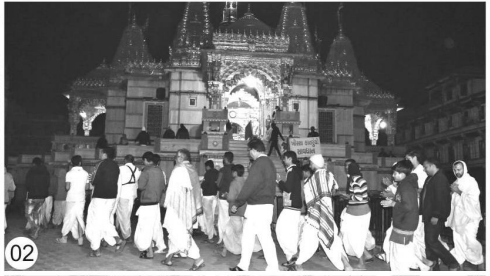
02

03

04

05

06

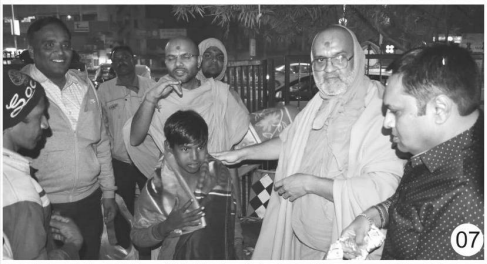
07

08

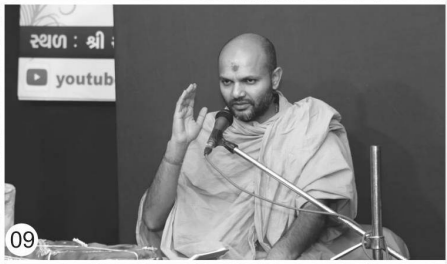

09

10

11

12

13

14

15

16

17

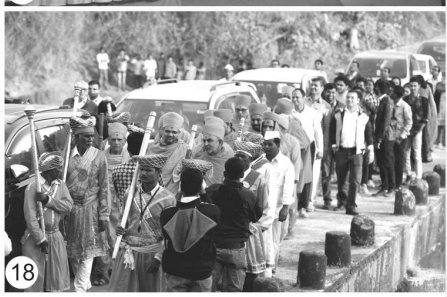
18

(०१ थी ०४) धनुर्मासमें प्रभात फेरीमें श्री स्वामिनारायण महामन्त्र धून करेते संतो - भक्तजनो, वरतालधाम (०५ थी ०४) अत्यधिक झाडो के दिन गरीब एवं निराधार लोगों को कम्बल वितरण (०९ थी १३) वरतालधाम - मासिक रविसभामें वचनामृत की कथा का श्रवण करवाते आ.को.श्री सन्तवल्लभ स्वामी, उपस्थित श्रोताजनो (१४ थी १८) आदिवासी विस्तारमें धर्मजागृति सम्मेलनमें मंचस्थ संतगण एवं सम्मेलित वापी की धर्मप्रेमी जनता

श्री वचनामृत द्विशताब्दि महोत्सव के उपक्रम में आयोजित 'वचनामृत पर्व' – वडतालधाम

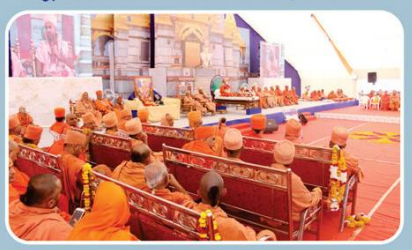

श्री वचनामृत द्विशताब्दि महोत्सव के उपलक्ष्यमें आयोजित प्रतिदिन वचनामृत होम मे आहूति प्रदान करते
प.पू. आचार्य महाराजश्री एवं संतगण

मालपुर – गुजरातमें आयोजित 'श्री स्वामिनारायण भगवान का समैया' में आशीर्वाद दे रहे
प.पू. आचार्य महाराजश्री, गुजरात के मुख्यमंत्रीश्री, विराट संख्यामें उपस्थित संतो एवं भक्तजन

भुसावल – महाराष्ट्र
श्री स्वामिनारायण मंदिर के
द्वितीय पाटोत्सव अंतर्गत
अभिषेक दर्शन एवं सत्संग समारोह

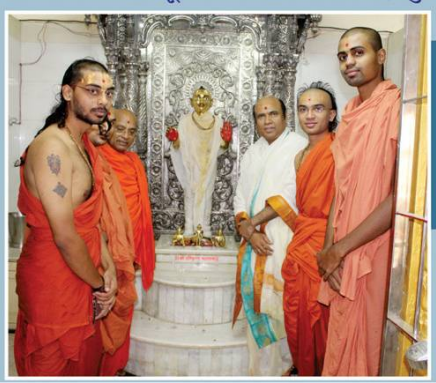

ईन्दौर श्री स्वामिनारायण मन्दिर के प्रथम पाटोत्सव निमित्त आयोजित श्रीमद् सत्संगिजीवन पंचाह पारायण तथा अभिषेक दर्शन

सारंगपुर श्री हनुमानजी महाराज के १७० वां पाटोत्सव, यज्ञ एवं सत्संग सभा के मनोहर दर्शन

रुस्तमबाग-सुरत नूतन मन्दिर उद्घाटन महोत्सव, मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा, श्री स्वामिनारायण चरित्र सप्ताह पारायण, श्री वचनामृत द्विशताब्दि महोत्सव अनावरण एवं उपस्थित विराट भक्तसमुदाय